पराग

जून १९६७
११२वां अंक

फोटो : नरेश बेदी

kissekahani.com

अनुक्रम

मुखपृष्ठका चित्र—

क्या ढब हैं इनके! : सुरेशचंद्र जयपुरिया १

मजेदार कहानियां—

बुद्धि और न्याय : एम. फरहत कमर ८
खलिहानमें : अवतारसिंह १२
कुत्तेसे सावधान : फ़ख़्रुलबारी २४
वे दिन भी क्या दिन थे : आईजक असीमोव २८
केकड़ा पंडितकी पाठशाला : मनोहर वर्मा ३६
छोटा इंजिन : वीरकुमार 'अधीर' ४०
आप मुआ तो जग मुआ : वीणा वल्लभ ५१

चटपटी कविताएं—

बच्चो, तुम हैं लाल टमाटर : अजयकुमार पाराशर ४
बड़े तार्किक बन जाओ : अशोक आचार्य १४
मुर्गीरानीका कौतूहल : सरस्वतीकुमार 'दीपक' ५५
छोटी रानी : ललन ५६
बोड़मबाज : विष्णुकांत पाण्डेय ५६
गधा और तितली : सीताराम गुप्त ५७
बुढ़िया दादी और मुंशीजी : मंगलराम मिश्र ५७

धारावाही उपन्यास—

मेरका पंजा-३ : अजय अनुपम १६

मनोहर कार्टून-कथा—

छोटू और मंटू : मोहन २०

अन्य रोचक सामग्री—

दुमकी पतवार (लेख) : जगपति चतुर्वेदी ११
बाल कलाकार मास्टर पुरुषोत्तम : टी. एन. मिश्र २७
चोर बिल्ली (फोटो कथा) : मेहताब किरण ३०
छुट्टियां और खेलें (लेख) : दमन ३२
गुरु अर्जुन देव (लेख) : डॉ. महीपसिंह ३४
भूटानके डाक-टिकट (लेख) : गुरुचरण बोहरा ४४

स्थायी स्तंभ—

कुछ अटपटे कुछ चटपटे : संपादक ६
छोटी छोटी बातें : सिम्मा १९
जीनेकी कला-१ : मलकारानी जैन २२
कहो कैसी रही : मुद्रा ४८
खिलौनोंका डिब्बा : अरुणकुमार ५२
रंग भरी प्रतियोगिता-६२ : 'पराग' कला विभाग ५९

शुल्क तालिका :

अवधि	स्थानीय	देशमें डाकसे	विदेशमें समुद्री डाकसे
१२ महीने	रु. ६.००	रु. ६.२५	पौं. ०.१०.१०
६ महीने	रु. ३.००	रु. ३.१५	" ०. ५. ४
३ महीने	रु. १.५०	रु. १.६०	" ०. २. ८

एक प्रति : ५० पैसे; विदेशमें पौं. ०. ०.१०

kissekahani.com

REGD. No. M.H. ...

बच्चो, हम हैं लाल टमाटर....

बच्चो, हम हैं लाल टमाटर,
चिकने चिकने, सुंदर सुंदर!
कच्चे हरे वस्त्र में रहते—
पक कर लाल ओढ़ते चादर!
सुनो हमारी गाथा चित्त धर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

मुख्य विटामिन बी–सी हम में,
पुटाशियम-क्लोरीन साथ में,
दांत-रक्त और श्वास अंग के—
रोग हटा, चुस्ती दें तन में।
ये बातें कहते हैं डाक्टर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

kissekahani.com

लेखा : चंद्रकांता

..खा कर हो जाओगे सुंदर

छाया : विजयचंद जी. दलाल

अगर किसी कारण ताकत कम,
नहीं करो इसका कोई गम।
एक गिलास हमारे रस का,
बना सको यदि पीने का क्रम

देंगे तुमको अपना-सा कर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

बन जाओगे जब ताकतवर,
तभी जी सकोगे तुम हंसकर,
दूर रहेंगे दुश्मन डर कर,
नहीं आएंगे रोग फटककर।

बात सत्य है सौ पैसे भर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

देखो हम सस्ते भी कितने!
आ जाते हैं बिकने इतने!
कुछ पैसों में खाओ जी भर,
कौन बिकेगा इतने गुण पर?

यह उदारता बस हम में भर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

इसी लिए तुमसे यह कहना—
पापाजी को समझा देना,
सब्जी लेने को जब जावें,
लाल टमाटर लेकर आवें।

भूल न जावें हमें सरासर,
बच्चो, हम हैं लाल टमाटर!

— अजयकुमार पाराशर —

कुछ अटपटे कुछ चटपटे

ओमप्रकाश चतुर्वेदी, भीलवाड़ा :
मुझको सपनोंमें गधे क्यों दिखाई देते हैं?
आत्मज्ञानके कारण!

अशोककुमार सिंह, भीखनपुर :
दोस्तके साथ दगाबाजी किस समय करनी चाहिए?
जब वह आत्महत्या करनेके लिए तुमसे जहर मंगाए!

बेलसिंह पंजाबी रंगीला, बिलासपुर :
अक्सर बड़े लोग शरारती छोटे बच्चोंको ज्यादा क्यों चाहते हैं?
इसलिए कि वे कमसे कम अपने प्रशंसकोंको तो बचें!

कुमारी कीरमोहिनी शर्मा, अम्बाला छावनी :
मेरी अकल घास चरने गई थी, परंतु अभी तक वापस नहीं आई, क्या करूं?
स्वयं घास चरना शुरू कर दो, कोई कुम्हार मिल गया, तो पीठपर लाद देगा!

राजीव, बलाचौर :
'राम-राम जपना, पराया माल अपना' करनेसे क्या भारतकी अन्न समस्या सुलझ जाएगी?
जब 'राम नाम सत्त' हो जाएगा, तब तो सुलझ ही जाएगी!

कुमारी सरला, इलाहाबाद :
क्या आप झूठकी सही परिभाषा बता सकते हैं?
क्यों नहीं—दूसरोंके गले उतारनेसे पहले जिसमें खुद मुंह भर लिया जाए!

विजेंद्रकुमार गर्ग, हापुड़ :
क्या राष्ट्र-सेवा अथवा समाज-सेवा चुनाव जीतकर ही की जा सकती है?
हां, क्योंकि चुनाव हारकर तो अपनी ही सेवासे फुरसत नहीं मिलेगी!

नरेंद्रकुमार सिन्हा, कथारा :
हम कुछ खाद्य पदार्थ देखते हैं, तो हमारे मुंहमें पानी क्यों आ जाता है?
क्योंकि अंगरकासे पानीके आयातका कोई प्रबंध नहीं है!

अख्तर अली, जूनिया :
जब संसारमें सब कुछ संभव है, तो कुत्तेकी पूंछ सीधी होना संभव क्यों नहीं?
क्योंकि कुत्तोंकी पूरी जातिको इस बारेमें कोई दिलचस्पी नहीं!

सत्यनारायण साहनी, हबड़ा :
अगर जानवर भी मनुष्यकी तरह अपनी बुद्धिसे काम लेना शुरू कर दें, तो?
तो सबसे पहले वे यही सवाल पूछेंगे!

शोभास्वरूप 'चुलकन', जयपुर—२ :
आप मेरी दाढ़ी देखकर क्या सोचेंगे?
सोचेंगे तो तब जबकि तुम्हारे पेटमें घुसकर उसे देख पाएंगे!

शमीम मोहम्मद खान, नागौर :
कोई ज्ञानकी कंजूसी करे, तो उसे क्या कहें?
अंग्रेजीमें 'केन्सोर', हिन्दीमें अनुत्तार्थ!

बृजेंद्रनाथ 'दीपक', बस्ती :
अगर आप प्रधान मंत्री हो जाएं, तो पहला काम क्या करेंगे?
वही जो सब करते हैं—फोटो खिंचवानेका!

प्रभात जोशी, राउरकेला—२ :
खानेके साथ अगर हम अचारकी तरह भ्रष्टाचार भी खा लें, तो कोई हानि तो नहीं?
उल्टे जेल-यात्राका लाभ ही हो सकता है!

रतनलाल सलूजा, नई दिल्ली-१ :
यदि किसी लड़केके कक्षामें ३३ प्रतिशत नंबर हों, तो वह पास होता है और यदि सारी कक्षामें ३३ प्रतिशत लड़के पास हों, तो वह कक्षा पास क्यों नहीं मानी जाती?
क्योंकि उससे पहला कक्षाके पासशुदा विद्यार्थियोंको उस कक्षामें बैठनेका पास मिलना मुश्किल हो जाएगा!

मनुकुमारी गौर, उज्जैन :
चप्पल घिस जाती है, पैर क्यों नहीं घिसते?
पैरोंमें चप्पल होनेके कारण!

बच्चोंके अटपटे प्रश्नोंके चटपटे उत्तर हम इस स्तंभमें छापते हैं। जिनके प्रश्न अधिक अटपटे होंगे, उन्हें सुंदरसे पुरस्कार मिलेंगे। जिन्हें पुरस्कार मिले हैं, उनके नामके पहले ★ का निशान लगा है। प्रश्न कार्डपर ही भेजो और एक बारमें तीनसे ज्यादा न भेजो। इस स्तंभमें पहेलियोंके उत्तर नहीं दिए जाएंगे। पता याद कर लो: संपादक, 'धरम (अटपटे-चटपटे)', पो. आ. बा. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई-१

सपना रानी लोध, जबलपुर :

अगर मैं उम्मीदवारके रूपमें इस चुनावमें खड़ी होती, तो आपकी दाढ़ी को चुनाव-चिह्न रखती, पर यदि आप खड़े होते, तो किस चिह्नको पसंद करते?

हमारे लंबे लंबे दाढ़ोंका सेट बड़ा उपयुक्त चुनाव-चिह्न होता!

देवेंद्रकुमार, उरई :

जब किसी मनुष्यका घोर अपमान हो जाता है, तो यही क्यों कहते हैं कि उसकी 'नाक कट गई'; कान या और कोई अंग क्यों नहीं कटा?

क्योंकि मनुष्य प्रायः इसीपर मक्खी नहीं बैठने देता!

आशारानी, रोजा :

महान पुरुषोंका कहना है 'गरीबोंकी सहायता करो' किंतु जो खुद गरीब हैं वे क्या करें?

वे अपनी सहायता आप करें!

जौलिराज आनंद, धनबाद; हरिचरणसिंह, ■ माकुम बं० :

मेरे मास्टरजी अच्छे उत्तरपर पुरस्कार देते हैं और आप अच्छे प्रश्नपर, ऐसा क्यों?

क्योंकि तुम्हारे अक्ल मास्टरजीके प्रश्न सुनकर चक्कर खाती है और हमारे उत्तर सुनकर!

विजयकुमार गुप्ता, बाराद्वारा :

आप मेरे प्रश्नोंका उत्तर क्यों नहीं देते?

बोरबलने कहा था कि कुछ लोगोंके सामने चुप रहना ही बुद्धिमानी है!

नरेशकुमार दिवान, साहिबगंज :

मनुष्यका 'हार्ट' किस परीक्षामें 'फेल' हो जाता है?

सहनशक्तिकी परीक्षामें!

मगनलाल, ठिया, कवधा :

सा[illegible] रस और गन्नेके रसमें क्या अंतर है?

गन्नेमें [illegible] कोमल, रौद्र आदि रस नहीं होते!

नरिंद्रमोहन, [illegible], संगरूर :

सूरज [illegible]ी बजाए पश्चिममें क्यों नहीं निकलता?

क्यों—[illegible]री कोई तुम्हारी तरह लेट-लतीफ लड़का है, जो फि[illegible] बाजेसे कक्षामें घुसे!

रमेशचंद्र अग्रवा[illegible]पाल :

क्या खटमल[illegible] पलंग मिल सकते हैं?

नहीं—पर प[illegible] खटमल जरूर मिल सकते हैं!

विनोदकुमार, चित[illegible] :

जब सच बोल[illegible] भी मार पड़े, तो क्या करना चाहिए?

वह काम नहीं क[illegible]हिए, जिसका सच इतना मार[illegible] हो!

मनिकेश्वर, राउरकेला :

हमारे प्रश्नोंसे आ[illegible]दांत खट्टे हो जाते हैं या मीठे?

कसैले!

कृष्णराव बिल्लौरे, खंडवा; [illegible]द्रकुमार चतुर्वेदी, टीकमगढ़ :

किसान पसीना देता है[illegible]ान खून देता है, तो नेता क्या देता है?

खून-पसीना एक करता है!

संजय भूषण, नई दिल्ली-५ :

गाय हमारी माता है, [illegible]सकी मौसी और बकरीको बुआ क्यों नहीं [illegible] ये दोनों भी तो दूध देती हैं?

इस रामराजके जमानेमें बहुत ज्या[illegible]दा बोलना ठीक नहीं!

★ कुमकुम सरीफ, द्वारा श्री सत्यना[illegible] अग्रवाल एडवोकेट, भट्टा बाजार, पूर्णिय[illegible]हार) :

नेताओं द्वारा बिल्ला चि[illegible]र वोट देनेके प्रचारको सुनकर बच्चे अपने[illegible]में क्या कहते होंगे?

यही कि वोट जरूर कोई खानेकी चीज

★ सुभाषचंद्र जायसवाल, केश इलेक्ट्रि[illegible]लर्स, ९२, न्यू यशवंत निवास रोड, इंदौर (म) :

बच्चे राष्ट्रकी संपत्ति हैं, तो बड़े?

संपत्तिपर टैक्सका भुगतान करने वाले!

kissekahani.com

बहुत दिनोंकी बात है स्याम देशमें एक राजा राज्य करता था। वह बड़ा अत्याचारी था। सब उसके गुस्से और कड़ी सजासे डरते थे। उसका विचार था कि लोग डरसे भले बन जाएंगे। लेकिन यह उसकी नादानी थी। भला कहीं डरके मारे भी कोई अच्छा बनता है? अच्छाई तो मनकी सफाई और अच्छे विचारोंसे आती है परंतु वह राजा सजाके द्वारा सुधारमें विश्वास रखता था।

एक बार राजाकी अंगूठी चोरी हो गई। राजाके लिए अंगूठी कोई मूल्यवान वस्तु नहीं थी, परंतु यह उसकी इज्जतका सवाल था। 'किसीको इतनी हिम्मत कैसे हुई कि मेरी अंगूठी चुराए?' राजाने अपने मनमें सोचा।

"अब क्या हो?" राजाने अपने मंत्रीसे पूछा।

"सबसे पहले सारे नौकरोंसे पूछा जाए," मंत्रीने सलाह दी।

"सब नौकरोंको बुलवाओ," राजाने आज्ञा दी।

और फिर—राजाने सबको इतना पिटवाया कि उनके शरीर नीले पड़ गए। वह तो सजा देनेका ही तरीका जानता था। किसीमें इतना साहस भी न था कि राजाको रोकता। मार खाकर एक नौकरने अंगूठीका पता बता तो दिया लेकिन एक अपराधीके साथ बहुतसे निर्दोष लोगोंको बेकार सजा मिली।

राजा इतना क्रूर और शक्की था कि लोगोंने एक कहावत बना ली थी :

पड़ोसीके न घर जाओ जो पैरोंको लगे माटी,

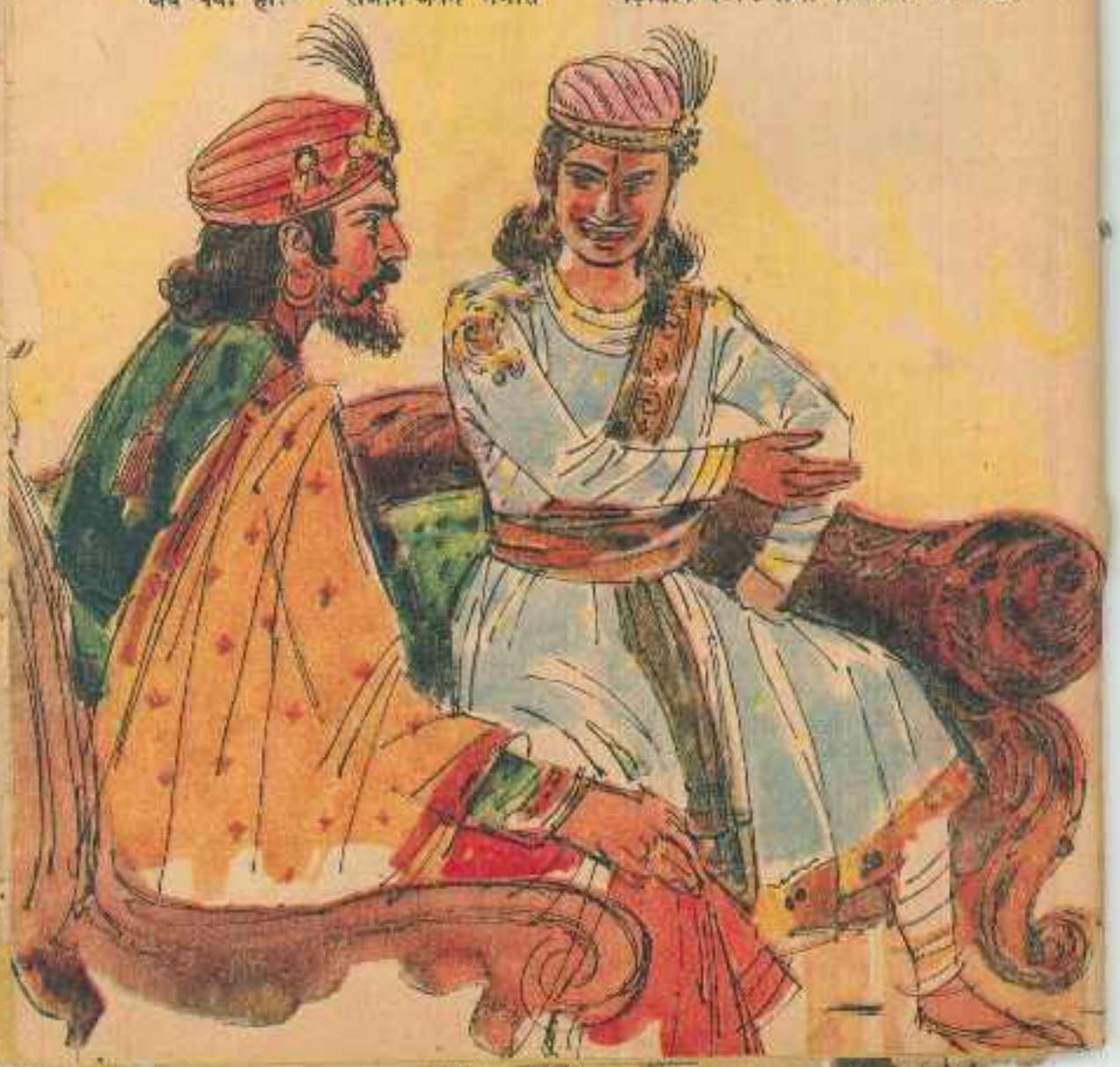

लगाकर दोष चोरीका न दे राजा कहीं फांसी!

एक दिन वही अत्याचारी राजा अपने बहुतसे सैनिकोंके साथ शिकारको गया। दोपहर तक सभी भागते-दौड़ते रहे परंतु कुछ हाथ न लगा। राजा सोचने लगा शिकार तो मिला नहीं किसी आसपासके गांवसे ही खानेका प्रबंध किया जाए। लेकिन वहां तो दूर दूर तक जंगल ही जंगल था—न कोई गांव न शहर। राजा एक टीलेपर चढ़ गया और इधर-उधर नजर दौड़ाने लगा। बहुत दूरपर उसने कुछ धुआं उठता देखा। राजा समझा कोई बस्ती होगी मगर धुआं तो तेजीसे बढ़ता जा रहा था। कुछ देर में धुआं आसमानपर फैलने लगा और तब राजा बात समझा। "अरे यह तो आंधी है!" वह चिल्लाया। "सब लोग कहीं आड़में हो जाएं," उसने आदेश दिया। मगर आड़में होनेसे पहले ही हवाके तेज झोंके आने लगे। चारों ओर अंधेरा छा गया और राजाको अपने साथी भी दिखाई देने बंद हो गए। किसीको कुछ पता न था कि कौन कहां है। हवाका शोर इतना था कि आवाज देने और चिल्लानेका भी कोई लाभ न था। राजा अभी अपने घोड़ेपर सवार था। घोड़ा तूफानसे घबरा गया और वह हवाके बहावके साथ सरपट दौड़ पड़ा। राजाने घोड़ेको रोकनेकी जितनी कोशिश की वह उतना ही तेज भागता रहा— भागता रहा, भागता रहा।

कहानी

बुद्धि और न्याय

—एम फरहत कमर

kissekahani.com

लगभग दो घंटे बाद आंधी उतरी, तो राजाका घोड़ा रुका। घोड़ा और घुड़सवार दोनों ही रेतमें बुरी तरह अट गए थे। परंतु संतोषकी बात यह थी कि पास ही कुछ तंबू दिखाई पड़ रहे थे। पास ही एक छोटा-सा चश्मा था। राजाने चश्मेपर पहुंचकर अपने हाथ-पैर धोए और ठंडा पानी पीकर आरामकी सांस ली।

"आप कौन हैं?" एक व्यक्तिने आकर बड़ी नम्रतासे राजासे पूछा।

"मैं स्याम देशका राजा हूं और तूफानमें भटककर यहां आ पहुंचा हूं।"

"आपका हार्दिक स्वागत है," उस व्यक्तिने कहा। "आप हमारे सरदारके पास चलिए, वह आपसे मिलकर बहुत खुश होंगे।"

राजाको संतोष हुआ कि वह गलत लोगोंमें नहीं पहुंचा। सरदारने उसकी बड़ी आवभगत की; उसको अच्छा खाना खिलाया और आराम-दायक बिस्तर देकर आराम करनेको कहा। सवेरे राजाने सरदारसे जानेकी आज्ञा मांगी, तो सरदारने कहा कि उनके कबीलेमें तीन दिनसे पहले मेहमानको जाने नहीं दिया जाता। राजाने क्षमा चाही क्योंकि उसके राजधानी न पहुंचनेपर सभीको चिंता होगी। इसपर सरदारने सुझाव दिया कि राजाका इस प्रकार अनजाने रास्तेपर अकेला जाना भी तो उचित न होगा—"मैं अपने एक आदमीके हाथ संदेश भेज देता हूं; कल आपके सैनिक आकर आपको ले जाएंगे। आप भी इस प्रकार सुरक्षित पहुंच जाएंगे और हमारी तीन दिनवाली बात भी पूरी हो जाएगी।"

राजाने यह बात मान ली। दिन भर कबीलेके लोग तीर-तलवारके करतब दिखाकर राजाका दिल बहलाते रहे। शाम तक राजाके सैनिक भी वहां पहुंच गए। सबका शानदार भोज हुआ और सब आरामसे सो गए।

सवेरे जब राजा सोकर उठा, तो उसने अपनी अशर्फियोंकी थैलीको गायब पाया।

"मेरे सिरहानेसे किसीने मेरी अशर्फियोंकी थैली उड़ा ली है," राजाने सरदारसे कहा।

"मुझे विश्वास है कि मेरे आदमी ऐसा नहीं कर सकते। वे बड़े सुखी और ईमानदार हैं।"

सरदारकी बात थी भी सच। कबीलेके सभी लोग सुखी और ईमानदार थे। वे कभी चोरी न करते थे। वे अच्छे लोग थे क्योंकि उनका सरदार दया और बुद्धिसे राज्य करता था। इसलिए वह काफी देर चुप रहा फिर बोला, "कोई बात नहीं मैं इसका पता लगा लूंगा।"

"मामूली-सी बात है आप इसके लिए अपने किसी आदमीको सजा न दें," राजाने शिष्टाचार-के नाते कहा।

"मैं सजाके बिना अपराधका पता लगा लेता हूं। सजा देना कोई अच्छा तरीका नहीं है। अपराधका पता लगाने के लिए बुद्धिसे काम लिया जाए, तो दंड देनेकी जरूरत ही नहीं पड़ती," सरदारने उत्तर दिया।

राजाको इस बातसे बड़ी हैरानी हुई। सरदारने अपने और राजाके सभी आदमियोंको इकट्ठा करके कहा: "हमारे अतिथिकी अशर्फियोंकी थैली चोरी हो गई है। यदि यह हमारे कबीलेके किसी व्यक्तिका काम है, तो हमारे माथेपर कलंक है। जो भी हो अब आप लोग बारी बारी मेरे तंबूमें जाएंगे और उसके बीच रखे हुए जादूई घड़ेमें अपना हाथ डालेंगे। जो चोर होगा, उसका हाथ अपने आप घड़ेमें फंस जाएगा।"

बारी बारी सभी तंबूके अंदर गए और वापस आकर लाइनमें खड़े होते गए। किसीका भी हाथ नहीं फंसा। राजाके मनमें जो कुछ आशा थी समाप्त हो गई। परंतु अभी खेल समाप्त नहीं हुआ था।

सरदार हर व्यक्तिका दायां हाथ सूंघता हुआ बढ़ने लगा। एक व्यक्तिको उसने लाइनसे बाहर आनेको कहा और शीघ्र ही उस व्यक्तिने अपना अपराध मान लिया। वह व्यक्ति राजाके सैनिकों-मेंसे एक था। राजाके पूछनेपर सरदारने बताया कि घड़ेमें कोई जादू नहीं बल्कि एक हल्की-सी सुगंध रख दी गई थी। जो चोर नहीं थे उन्होंने बेखटके अपने हाथ घड़ेमें डाल दिए और उनके हाथोंपर सुगंधका असर आ गया। चोरी करने वालेने पकड़े जानेके डरसे अपना हाथ भीतर डाला ही नहीं और उसका हाथ सूंघकर मैंने पाया कि सुगंध नहीं है।

इस बातसे राजाकी आंखें खुल गईं। उसको पता लग गया कि न्यायके लिए बुद्धिकी आव-श्यकता है सजाकी नहीं। ●

तैरनेकी अ
बल पा
तैरते हैं। पै
हाथ-पैर मार
न हो, तो
तैरते हैं, तो
तरहकी तैरा
समान हो ज
करते हैं।

मछलिय
बदनमें लगे
हैं। दुम तैरने
काम करती
काठकी पट्टी
लट्ठे या डंडे
डंडा हत्थेसे
या पतवार
चलनेकी दिशा
में पीछे बैठा
में इस तरह
है। वह उसी
बदल सकता
अपनी दुमका
हैं और दिशा

ह्वेल, सु
पानीके भरा
होती है। उस
जिन्हें पलक
पालि (पूंछ
हैं। इसे पण
सकते हैं, क
या पत्ती-सा
ये पर्णाभ (प
इन जंतुओंको

stem the tide

दुम की पतवार

– जगपति चतुर्वेदी

तैरनेकी अनेक विधियां होती हैं। छातीके बल पानीपर लेटे हाथ-पैर मारते लोग तैरते हैं। पीठके बल लेटे उल्टे भी बंद पानीमें हाथ-पैर मारते तैर सकते हैं। हाथका कुछ काम न हो, तो केवल पैरोंके ही चलानेसे लोग जब तैरते हैं, तो उसे ठड़किया तैरना कहते हैं। इस तरहकी तैराकीमें हम पैरोंको जंतुओंकी दुमके समान ही डांड़ और पतवारकी तरह इस्तेमाल करते हैं।

मछलियोंकी दुम खड़ी पट्टी-सी होती है। बदनमें लगे पंखोंसे वे आगे बढ़नेका काम लेती हैं। दुम तैरनेकी दिशा बदलनेके लिए पतवारका काम करती है। नावोंमें भी ऐसी खड़ी चपटी काठकी पट्टी बनी होती है। उन तख्तोंको एक लट्ठे या डंडेमें लगाए रखते हैं। यह तख्तोंमें लगा डंडा हत्थेसे नावके ऊपर बैठकर घुमानेसे तख्ते या पतवारको घुमा देता है। उसीसे नावकी चलनेकी दिशा निश्चित होती है। कुछ छोटी नावोंमें पीछे बैठा एक मांझी एक ही डांड़ लेकर पानीमें इस तरह चलाता है कि नाव आगे चल सकती है। वह उसी डांड़की चालसे नावकी दिशा भी बदल सकता है। कुछ जंतु इस डांड़की तरह अपनी दुमका इस्तेमाल कर पानीमें तैर सकते हैं और दिशा भी बदल सकते हैं।

ह्वेल, सूंस आदिकी दुम खड़ी न रहकर पानीके धरातलके मेलमें रहने वाली लेटी हुई होती है। उसमें दो चपटे खंड (फांक) होते हैं जिन्हें फलूक या पूंछ की पालि (पुच्छ पालि) कहते हैं। इसे पर्णाभ भी कह सकते हैं, क्योंकि वह पर्ण या पत्ती-सा जान पड़ता है। ये पर्णाभ (फलूक) पानीके इन जंतुओंको पानीमें डूबने, पानीके ऊपर आने या आगे तैरनेमें सहायता करते हैं। दायें-बायें जानेमें इनसे मदद नहीं मिलती। इन जंतुओंको फेफड़ेसे सांस लेना पड़ता है इसलिए बहुत जल्दी पानीके तलपर पहुंचने और खटका होनेपर या शिकारकी खोजमें पानीमें जल्दी डूबने या नीचे जानेकी आवश्यकता होती है। इसलिए पानीके तलके मेल या क्षैतिजमें रहने वाले दुमके पर्णाभ या चपटे दोनों खंड बड़े कामके होते हैं। इन जंतुओंके बदनमें बने पैर तैरनेमें कुछ भी मदद नहीं करते। वे केवल तैरनेकी दिशा बदलने या बदनको पानी साधे रख सकने (संतुलित रखने) में ही सहायता करते हैं।

मेंढकके दुम नहीं होती लेकिन बच्चेकी हालतमें इसमें दुम होती है, जो तैरनेमें मदद पहुंचाती है। मेंढक पानीमें ही अंडे देता है। वहीं बच्चे पैदा होकर दुम टूटनेके बाद सयाने होनेपर बाहर आते हैं या पानीमें ही पड़े रहते हैं। एक न्यूट नामका पानीका जंतु अपनी लंबी, चपटी दुमको पानीमें हिलाता-डुलाता तैरता है। कस्तूरी चूहा भी पानीका छोटा जंतु है। इसकी दुम न्यूटकी तरह ही अगल-बगल या खड़ी चपटी होती है जिससे दुमको पानीमें हिला-डुलाकर यह तैरता है। बीवरकी दुम आड़े

(शेष पृष्ठ ३९ पर)

kissekahani.com

गर्मीकी छुट्टियोंमें दादाजी और बच्चे मामाजी-के पास गांवमें रह रहे थे।

मामा-मामीके कोई संतान तो थी नहीं, इसलिए बच्चोंको यहां आकर अपने डैडी-मम्मी-की कोई खास याद नहीं आई।

उधर दादाजी थे देहातके आदमी। गांवमें आते ही उनके अंदरका सोया किसान जाग उठा। मामाजी तब खलिहानमें खेतोंसे गेहूं काटकर लाए थे। दादाजी सुबहके खलिहान गए दिन ढले लौटते थे। दोपहरको पंद्रह-बीस मिनिटके लिए खाना खाने आते थे। मामाजी तो साथ होते ही थे।

बस पिकी, राजू, मुन्नूके मजे थे। कभी ताशकी बैठक जम रही है, कभी 'लूडो' खेली जा रही है, कभी सांप-सीढ़ी।

एक दिन संध्याको सब दरीपर बैठे भोजन कर रहे थे। दादाजी खाते हुए बार बार नाक सिकोड़ते थे, इधर-उधर देखते थे, फिर चुपचाप खाने लगते थे। लगता था वह भोजन नहीं, कुनैन-की गोलियां खा रहे हैं। मामी परस रही थीं। खाना खिलानेके बाद वह सबके हाथ धुलाने लगीं, तो चौंककर बोलीं, "यह क्या, चाचाजी, सब्जी-को तो आपने मुंह भी नहीं लगाया! रोटी क्या सूखी ही निगल गए? आपके लिए तो मैंने शहरसे मटर मंगवाई थी।"

"बहू, सब्जीमें नमक कुछ अधिक पड़ गया है," सकुचाते हुए दादाजीने कहा।

"इससे बढ़कर तो झूठ हो ही नहीं सकता," मामी हंसीं, "नमक खत्म हो गया। किसी तरह नमकदानी खुरच खुरचकर तो मैंने नमक पूरा किया। क्यों, बच्चो, नमक क्या तेज था?"

"बिल्कुल भी नहीं, मामीजी!" तीनों कोरसमें बोले।

"दादाजीकी
ह!" राजूने अ
"तुम मेरी
कटोरी मामीके
मामीने सब्ज
रखी और तुरंत
की एक ओर
मामी बोलीं, "
इन्होंने आपकी
"मामीजी!
हैं। हमपर आप
ने खड़े होकर
"फिर बाकी
"हो सकता
ही नमक रखा
हालांकि मा
कर सब्जी डाली
के लिए वह चुप्प
भूल गए कि वह
चाहते थे—'पि
जबान चलाते
कुछ बोलनेसे प
फुहार बनकर स
दादाजी सा
थे, सो शहरी

kissekahani.com

kissekahani.com

हास्य कहानी

खलिहान में

— अवतारसिंह

"दादाजीकी जीभमें कोई दोष उत्पन्न हो है!" राजूने अपनी राय दी।

"तुम मेरी सब्जी चखकर देखो," दादाजीने कटोरी मामीके आगे सरका दी।

मामीने सब्जीमें उंगली डुबाकर जीभपर रखी और तुरंत ही बाहर निकाल ली। दादाजीकी एक ओर मुन्न बैठा था, दूसरी ओर पिंकी। मामी बोली, "यह मुन्न या पिंकीकी शरारत है। इन्होंने आपकी सब्जीमें ऊपरसे नमक बुरका है।"

"मामीजी! यह आपका सरासर अन्याय है। हमपर आप झूठा दोष मढ़ रही हैं!" पिंकीने खड़े होकर प्रतिवाद किया।

"फिर बाकी सब्जी क्यों ठीक है?"

"हो सकता है, दादाजीवाली कटोरीमें पहले ही नमक रखा हो। आपने देखा न हो।"

हालांकि मामीने कटोरी अपने हाथसे मांजकर सब्जी डाली थी फिर भी मामला खत्म करनेके लिए वह चुप्पी साध गईं। इधर दादाजी क्रोधमें भूल गए कि वह पानी पी रहे हैं। वह चीखना चाहते थे—'पिंकी, शर्म नहीं आती कतर-कतर जबान चलाते। यही सीखा है स्कूलमें!' पर कुछ बोलनेसे पहले ही उनके मुंहमें भरा पानी फुहार बनकर सामने बैठे मामाजीपर बरस पड़ा।

दादाजी सात वर्षसे नई दिल्लीमें रह रहे थे, सो शहरी आदतें उनमें अपने आप आ गई थीं। एकदम बोले, "सॉरी! वैरी सॉरी!!"

मामाजी उनका मुंह देखने लगे कि दादाजी कह क्या रहे हैं।

उधर राजू महाशय इसका फायदा उठाकर बोले, "दादाजी, एक तो आपने मामाजीपर जूठा पानी बरसा दिया, दूसरे ऊपरसे गाली निकालते हो।"

"पहले तो आप कभी गाली देते न थे!" मामाने कुछ शिकायतके-से स्वरमें कहा।

"जी हां, यहीं आकर यह गंदी आदत पड़ी है। गालियां भी जाने किस भाषामें निकालते हैं, दूसरा समझ . . ." मुन्नने कहना चाहा।

"ठहरो, शैतानकी आंतों . . ." दादाजी क्रोधमें लाल होकर उनकी ओर लपके, पर बच्चे उनके खड़े होते ही दौड़कर उनकी पहुंचसे बाहर निकल गए। पिंकी हाथ आई भी, पर मछलीकी तरह फिसलकर फिर भाग खड़ी हुई।

रातभर दादाजी सोचते रहे कि जो बच्चे उनके सामने इतनी बड़ी शरारत कर सकते हैं वे पीछे तो न जाने क्या करते होंगे। इसका भी कुछ इंतजाम होना चाहिए।

अगले दिन जब वह बैलोंको चारा खिला रहे थे, तो बोले, "बच्चो, आज तुम्हें खलिहान चलना है।"

मामीने बहुतेरा कहा कि बच्चे घरपर होते हैं, तो उनका भी जी बहला रहता है, पर दादाजीने एक न सुनी।

दो बैल मामाजी ले जा रहे थे, दो दादाजी। बच्चे पीछे पीछे आ रहे थे। दादाजीने मुन्न और राजूको एक एक बैलकी रस्सी थमा दी। उन्होंने बैल कभी हांके नहीं थे, सो इस काममें उन्हें बड़ा आनंद आ रहा था। चाबुक राजूके पास था। कोई भी बैल रुकता, तो राजू खट्टसे उसके पेट

पर चाबुक दे मारता। दादाजीने समझाया, "राजू भाई, जब पुलिस भीड़को तीतर-बितर करनेके लिए गोली चलाती है, तो हमेशा टांगको निशाना बनाती है। वही सिद्धांत यहां अपनाओ। बैल रुके, तो टांगपर चाबुक जमाओ। पेटपर मारनेसे वह भड़क सकता है।"

टोली खलिहान पहुंची। बच्चोंने देखा कि गेहूंकी सुनहरी बालियां जमीनपर एक घेरेमें डालकर एक गोल मंच-सा बनाया हुआ है। बैलोंको उस मंचपर चढ़ाकर दादाजीने बच्चोंको सामने खड़ा किया और लेक्चर देना शुरू किया। बोले, "बच्चो, यह खलिहान है।"

"यह किस काम आता है, दादाजी?"

"बीचमें मत बको, पिंकी! मुझे बोल लेने दो। बादमें तुम प्रश्नकर सकती हो। हां तो, जब खेतमें गेहूंकी बालियां तैयार हो जाती हैं, तो काटकर यहां ले आते हैं। उन कटी बालियों-को जमीनपर फैला दिया जाता है जैसा कि तुम देख रहे हो। फिर उसपर बैल चलाए जाते हैं। बैल खुरोंसे बालियां रौंदकर दाने अलग कर देते हैं। हवामें उड़ाकर दानोंकी ढेरी बना ली जाती है। जो बाकी बचता है उसे कहते हैं भूसा।"

"क्या?" बच्चोंकी आंखें फैल गईं।

"भूसा... भूसा! और कोई प्रश्न?"

"दादाजी, क्या अमरीकी पी. एल. ४८० गेहूं हमारे देशमें उग सकता है?" पिंकीने पूछा।

"हां हां, उग सकता है। हमारे देशके जल-वायुमें हरेक नंबरका गेहूं उग सकता है," दादाजी-ने अपना ज्ञान बघारा।

तीनोंकी हंसी छूट गई। किसी तरह हंसी रोककर पिंकीने अगला प्रश्न किया, "हमारे खेतमें किस नंबरका गेहूं उगता है?"

"यह मुझे नहीं पता, मैं इस इलाकेमें पहली बार आया हूं। अपने मामासे पूछना," दादाजीने उत्तर दिया। फिर बोले, "आज तुम्हारा काम है इन गेहूंकी बालियोंपर बैल चलाना।"

दादाजीने सोचा था कि बच्चे रोते-झींकते यह काम करेंगे। जब उनके पैरोंमें पड़कर क्षमा मांगेंगे, तो उन्हें छुट्टी दूंगा। पर हुआ इसके विपरीत। तीनोंमें झगड़ा हुआ कि कौन पहले बैल चलाएगा। आखिर बारियां बना ली गईं।

बैल घूमने लगे। पहले राजूकी बारी थी। दादाजी कुछ देर उसे देखते रहे, फिर संतुष्ट होकर झोंपड़ीके अंदर हुक्का गुड़गुड़ाने चले गए। मामाजी पहलेसे ही अंदर बैठे दम लगा रहे थे।

राजू कुछ ही देरमें उकता गया। गर्मीसे उसे पसीना आ गया। भला यह भी कोई काम है कि गोल गोल घूमे जाओ। कुछ देखकर वह एक ओर खड़े मुन्नूसे बोला, "देखो, बैलोंके मुंहपर रस्सियों-की जाली कैसी बंधी है!"

"हां, दादाजी शायद उतारना भूल गए हैं," मुन्नूने कहा।

"देखो तो बेचारे बैलोंको सांस भी नहीं आ रही है," पिंकीने अपनी सहानुभूति जताई। हालांकि जालीमें इतनी बड़ी बड़ी मोरियां थीं कि दो दर्जन बैल सांस ले सकते थे।

तीनोंने तय किया कि जालियां खोल देनी चाहिएं। बैल घूमे जा रहे थे। दादाजी उन्हें रोकनेका ढंग नहीं बता गए थे। बड़ी समस्या आ पड़ी।

राजूने चारों बैलोंकी रस्सियां खींचीं। मुन्नूने चाबुक उनके मुंहके पास घुमाया। पिंकीने हाथ नचाकर उन्हें धमकाया। इस मिली-भगतसे सचमुच बैल रुक गए।

राजूने बैलोंके मुंहपरसे जालियां उतार दीं। उनकी टांगोंमें चाबुक मारा। वे फिर घूमने लगे।

"रेलगाड़ी और बैलोंमें तो कोई फर्क ही नहीं। दोनों अपने आप पटरीपर चलते रहते हैं!" बैलोंके लगातार चलनेसे गेहूंकी बालियोंमें पट-

बड़े तार्किक...

सुना होगा तुमने, प्रिय बच्चो,
कहीं से घूम लो गोलाकार;
तुम जहां से चले थे
वहीं पहुंच जाओगे।

और
देखा भी होगा
रेल यात्राओं में—
दूर घूमता गोल क्षितिज।

दूर से आता जहाज,
पहले बस समुद्र में चलता है;

...बन जाओ

धुआं उगलता खंभा
फिर पास आता आता
पूरा जहाज बन जाता—
यह तुमने देखा ही होगा।

पर मानो मेरी बात,
तुम करो चाहे इसमें विश्वास,
कि पृथ्वी गोल है,
पर कभी इसे ही झुठलाओ,
और बड़े तार्किक कहलाओ!

—अशोक आत्रेय

रियां-सी बन गई थीं। उन्हें देखकर पिंकीने यह कहा था।

"फिर बैल चलाना कितना आसान है; रस्सी खींची रुक गया, डंडा मारा चल पड़ा। रेलके इंजिनमें तो यह बटन दबाओ, वह तार खींचो, यह चक्का घुमाओ, वह डंडा चकेलो, इसपर पैर रखो, उसपर हाथ मारो, कोयला झोंको, पानी डालो, भाप बनाओ, राख निकालो, ओफ्फोह! तब कहीं गाड़ी खिसकती है!" राजू एक सांसमें सब कह गया।

तभी खलिहानमें कुछ रंग-बिरंगी तितलियां उड़ती आईं।

बैल अपने आप घूम ही रहे थे। तीनों उनके पीछे दौड़ पड़े। तितलियां आगे आगे उड़ती गईं। खलिहान पीछे छूटता गया।

जब बच्चे बिल्कुल थक गए, तो हांफते हुए एक पेड़की छायामें बैठ गए। काफी देर बाद वे लौटे।

बच्चोंने खलिहानके नजदीक आकर देखा, बैलोंके मुंहपर जालियां बंधी हैं और दादाजी उन्हें घुमा रहे हैं।

बच्चोंपर नजर पड़ते ही दादाजी चिल्लाए, "इधर तो आओ, कम्बख्तो! किसने इनके मुंहपरसे जालियां खोली थीं? आधा गेहूं बैल खा गए!"

बच्चे यह सिंह-गर्जना सुनकर वहीं रुक गए। तीनोंको अब जालियोंका उपयोग समझमें आया।

दादाजीने जब देखा कि बच्चे आगे बढ़ते ही नहीं, तो स्वयं चाबुक लहराते हुए उनकी ओर दौड़े।

बच्चे गांवकी ओर भाग निकले। गांव वहांसे कोई मील भर था।

दो फर्लांग दौड़कर बच्चोंने पीछे मुड़कर देखा। दादाजी भूतकी तरह चाबुक घुमाते हुए आ रहे थे।

बच्चे फिर दौड़ पड़े। पिंकी राजूसे बोली, "भैया, मेरी छाती दुख रही है। हाय, मुझसे दौड़ा नहीं जाता। मुझे पीठपर बिठा लो। दादाजी अभी बहुत दूर हैं।"

राजूने उसे पीठपर लादा और दौड़ने लगा। जानपर बनी थी। सौ गज पारकर उसने पीछे नजर फेरी। दादाजी काफी नजदीक आ गए थे। मुन्नू बहुत आगे निकल गया था।

राजूके पसीने छूट गए। पिंकीको वहीं पटककर बोला, "पिंकी, मेरी प्यारी बहन, क्षमा करना। युद्ध-भूमिमें सैनिक इकट्ठे लड़ते हैं, पर भागते हुए एक-दूसरेकी सहायता नहीं करते!" कहते कहते राजू हवा हो गया।

पिंकी कुछ भागी भी, पर फिर हांफकर बैठ गई। दादाजी यमदूतकी तरह प्रतिपल नजदीक आते आ रहे थे। पिंकीका दिल बैठा जाता था। चाबुक लगनेपर कितना दर्द होता होगा, इस कल्पना-मात्रसे ही पिंकी सिहर उठी। दादाजी यह भी नहीं सुनेंगे कि जालियां राजूने खोली थीं, नमक मुन्नूने डाला था। मन ही मन पिंकी प्रार्थना करने लगी—'हे हनुमानजी, इस समय दादाजीको एक ठोकर लगा दो, मैं दिल्ली जाकर बिरला-मंदिरमें तुम्हें सवा रुपयेका प्रसाद चढ़ाऊंगी।"

पिंकीको बैठी देखकर दादाजी कुछ धीमे हो गए। पिंकीने हनुमानकी रिश्वत बढ़ाकर सवासे पांच कर दी।

हनुमान तो नहीं, पर उनकी मम्मीने जरूर पिंकीकी बात सुन ली। दादाजी उससे तीस गज दूर होंगे कि तेज हवा बहने लगी। दादाजीका कंधेपर रखा गमछा जो हवामें उड़ा, तो जैसे हवाई जहाज बन गया। दूर दूर उड़ता गया। विवश होकर दादाजीको पीछे भागना पड़ा।

पिंकी कभी डैडीसे पूछा करती थी, "डैडी, इंग्लैण्ड तो हमारा दोस्त है न, फिर वह लड़ाईमें पाकिस्तानकी ओर क्यों है?" आज उसे पता चल गया था कि विपत्तिमें सगे भी साथ छोड़ देते हैं।

धीमे धीमे कदमोंसे वह गांवकी ओर चल दी।

धारावाही उपन्यास

शेर का पंजा

kissekahani.com

अब तक तुमने पढ़ा था :

गिरीश एक होनहार लड़का था लेकिन चाट-पकौड़ी-की लत और घूमने-फिरनेके शौकने उसे कहींका न छोड़ा। मौका हाथ आते ही वह अपने पिताके रुपये उड़ाकर बम्बई जा पहुंचा, वहां उसकी मौसी रहती थी और वहां लड़कोंको उड़ाने वाले एक दलके सरदार केहरके हाथ पड़ गया। वह उसे बहकाकर अपने घर ले गया। वहां वह थकाहारा गहरी नींदमें सो गया। आंख खुलनेपर उसने केहरको किसी-के साथ खुसरपुसर करते सुना, तो उसके होश उड़ गए।

उसे पता चला कि केहर उसे बच्चोंसे भीख मंगवा-कर रुपया कमाने वाले एक गुंडेके हाथों सौंपकर एक भारी रकम इनाममें पानेकी योजना बना रहा है। वह सावधान हो गया और केहरको किसी प्रकार चकमा देकर भाग निकला। केहरने उसका पीछा किया। लेकिन गिरीश एक पेड़के ऊपर चढ़ गया और केहरकी टैक्सी आगे निकल गई।

लो, अब इससे आगे पढ़ो :

(3)

गिरीश केहरको चकमा देनेमें कामयाब हो गया। उसने केहरको काफी समय तक वापस न आते देख समझ लिया कि अब वह नहीं आएगा। वह झटपट पेड़से उतरा और चौकन्नी निगाहोंसे इधर-उधर ताकता आगे बढ़ने लगा। वह यह नहीं जान पा रहा था कि इस समय वह कहां है।

वह चलता रहा। रास्ता भांय भांय कर रहा था. इक्का-दुक्का आदमी आ-जा रहे थे। वह हिम्मत बांधे आगे बढ़ता रहा। हर आदमीको दूरसे आते देख उसे केहरका भ्रम हो जाता और वह सहमकर छिपनेकी जगह खोजता। कभी जगह मिल जाती तो छिप जाता, नहीं मिलती तो किसी दीवारसे चिपक रहता।

तभी एक टैक्सी दिखाई दी। वह लपककर उस तक पहुंचा। टैक्सी ड्राइवर टैक्सीमें बैठा ऊंघ रहा था। गिरीश-ने पूछा, "ऐ, स्टेशन ले चलोगे?"

टैक्सीवालेने ऊंघते स्वरमें कहा, "तीन रुपये लगेंगे।"

गिरीश इस समय तीन क्या तीस भी देनेको तैयार था; बोला, "चलो।"

टैक्सी चल पड़ी। गिरीशने नेकरकी जेबमें हाथ डाले ही डाले कपड़ेमें बंधे नोटकी गड्डी खोली। फिर चुपकेसे दो नोट कमीजकी जेबमें रख लिये। इतना करने-के बाद वह आश्वस्त हुआ।

टैक्सी रुकी। उसने एक बार बाहर निगाह डाली और फिर बैठा रहा। ड्राइवरने कहा, "उतरिए, स्टेशन आ गया।"

"यह कहां है स्टेशन?"

"और क्या
गिरीशने
लेकिन वैसा नहीं
बोरीवली लिखा
स्टेशन जाऊंगा।
"तो यों कह
जानेके तो बहुत
"कितने
चिंता नहीं थी।
टैक्सी ड्राइ
कैसे ठसे रातके
घूम रहा है। उस
है, इसलिए दूसरे
लेकिन तुम बच्चे

अवध अनुपम

"और क्या है यह?"

गिरीशने एक बार फिर देखा। हां, स्टेशन ही है, लेकिन वैसा नहीं जैसा उसने सवेरे देखा था। स्टेशनपर बोरीवली लिखा था। वह बोला, "अरे भइया, मैं बम्बई स्टेशन आऊंगा।"

"तो यों कहो, मैं समझा बोरीवली स्टेशन। बम्बई जानेके तो बहुत रुपये लगेंगे।"

"कितने लगेंगे?" गिरीशको इस समय रुपयेकी चिंता नहीं थी।

टैक्सी ड्राइवर इस बच्चेको बहुत चाहती पा रहा था। कैसे इसी रातके ग्यारह बज जानेके बाद भी यह बेधड़क घूम रहा है। उसने कहा, "रातके समय रुपये ज्यादा लगते हैं, इसलिए दूसरेसे तो पच्चीस रुपयेसे कम नहीं लेता, लेकिन तुम बच्चे हो इसलिए पंद्रह रुपये लूंगा। यानी कुल अठारह रुपये देने होंगे।"

"दूंगा।"

"जाना कहां है?"

"जाना तो वैसे बरेली है, लेकिन दिल्लीके लिए गाड़ी पकड़नी होगी।"

"अकेले जाओगे?"

"हां।"

"तुम्हारा घर कहां है?"

"बरेली।"

"भागकर आए हो?"

"आया भी भागकर ही था, अब जा भी भागकर ही रहा हूं।"

"क्यों?"

"तुम टैक्सी चलाओ।"

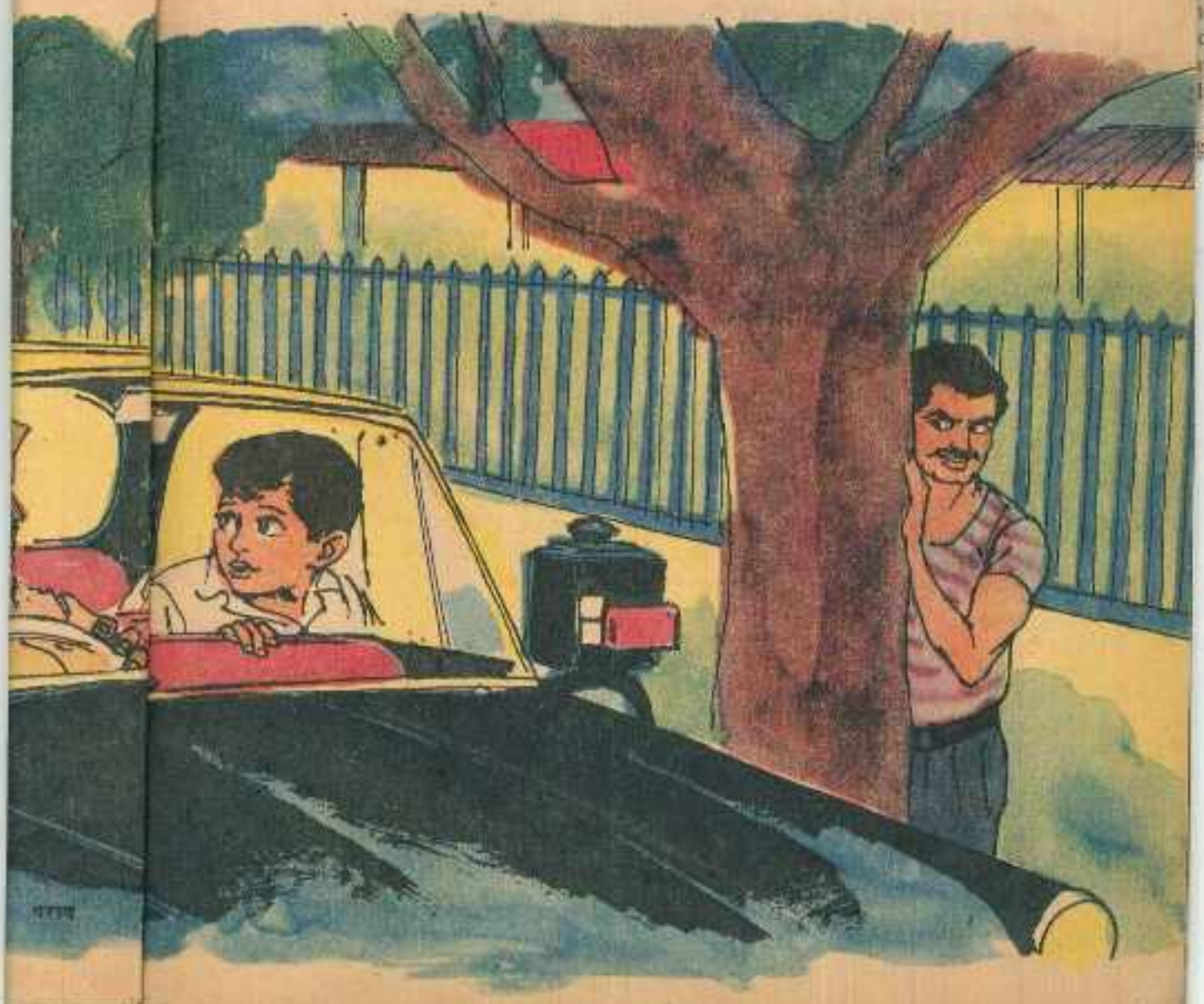

हमारी पसंद प्रतियोगिता नं.४ का परिणाम

'हमारी पसंद' प्रतियोगिताके अंतर्गत 'पराग' के अप्रैल अंकमें प्रकाशित कहानियोंके बारेमें हमने जानना चाहा था कि अपनी पसंदके विचारसे कौन-सी कहानी तुम पहले, दूसरे तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। सर्वशुद्ध हल किसी भी प्रतियोगीका नहीं निकला। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम श्रेष्ठ कहानियोंके बहुमतसे मेल खाता हुआ निकला उनकी संख्या ५ है। इसी लिए पुरस्कारके अधिकारी दो बच्चोंका चुनाव लाटरी द्वारा किया गया जिनके नाम और पते इस प्रकार हैं :

- **किशोर साहबानी, द्वारा न्यू गोपाल स्टोर्स, दुर्ग (म. प्र.)।**
- **प्रदीपकुमार सेठी, ७६ डबल स्टोरी, न्यू राजेन्द्रनगर, नई दिल्ली–५।**

बाकी जिनके हल बहुमतसे मेल खाते हुए निकले उनके नाम हैं—नरेशकुमार बोथरा, कलकत्ता–७; मिर्जा, जबलपुर; मयंक मोहन, इलाहाबाद।

सही हल वाली कहानियोंका क्रम इस प्रकार है :

१– मालूम नहीं साब।
२– दोस्त और चूहे।
३– अब परिणाम निकला।
४– टिकट कहां गए
५– मेहमान
६– एक रुपयेका मूल्य
७– श्वानभक्त स्वामी

"देखो, बेटे," टैक्सीवाला बोला, "तुम बच्चे हो, सही बात जाने बिना अब मैं टैक्सी चलाने वाला नहीं। क्या पता कोई कानूनी लफड़ा पैदा हो जाए। सारी बात सच सच कहो।"

गिरीश परेशान हो उठा। उसे यहांसे भाग जानेकी जितनी जल्दी थी, उतनी ही देर हो रही थी। वह चिढ़ते हुए बोला, "सब बताऊंगा, लेकिन पहले यहांसे चलो।"

"तुम डरते क्यों हो, मैं तुम्हारे साथ हूं। हो सकता है मैं तुम्हें कोई आसान रास्ता बता सकूं," टैक्सीवालेने धीरज बंधाया।

गिरीशने कहा, "मैं घरसे भागकर अपनी मौसीके यहां आया था। लेकिन रास्तेमें ही एक बुरे आदमीसे मुलाकात हो गई। वह धक्कर देकर 'स्टार' के बदले बारीकली लाया और न जाने कहां ले गया। जहांसे मुझे मालूम हुआ मेरे मौसा कहीं बाहर चले गए हैं। उसने मौसीका पता भी चुरा लिया। वह मुझे भीख मंगवाने वालोंके हाथ बेचना चाहता था। मैं भाग आया हूं। वाकई मैं तो यही समझ रहा था कि वह स्टार ले जा रहा है मुझे, लेकिन यहां स्टेशन देखकर समझा कि यह तो बोरीवली है।"

टैक्सीवाला चुपचाप बैठा सुन रहा था। गिरीशकी बात सुनकर बोला, "हूं, तुम उस आदमीका घर दिखा सकते हो।"

गिरीश एक मिनिटके लिए सोचमें पड़ गया, फिर बोला, "मैं भागनेकी धुनमें गलियां नहीं पहचानकर रख सका हूं।"

"चलो, पुलिसमें खबर दे दें। ऐसे आदमीका पकड़ा जाना बहुत जरूरी है।"

लेकिन गिरीश तैयार नहीं हुआ। वह इस चक्करमें पड़नेको खास तौरसे इसलिए तैयार नहीं था क्योंकि उसने भी चोरी की है। उसने कहा, "भइया मेरे, मैं अपनी जानकी खैर नहीं समझता। ऐसे लोग सब कुछ कर सकते हैं। मैंने जासूसी किताबें पढ़ी हैं, मैं जानता हूं, ऐसे खूंखार लोग सब कुछ कर सकते हैं।"

"लेकिन पुलिस तुम्हारी मदद करेगी। वह तुम्हें सही-सलामत तुम्हारे घर पहुंचा देगी," टैक्सीवाला बोला।

"वह तो ठीक है, भइया, लेकिन मैं फेहरके किसी भी साथीके हाथ कभी पड़ गया, तो वह न जाने क्या करे। मैंने पढ़ा है बदमाश जब बदला लेनेपर तुलते हैं, तो कहीं भी जाकर बदला चुका लेते हैं। तुम मुझे स्टेशन पहुंचा दो, बड़ी मेहरबानी होगी।"

टैक्सीवाला अपने कामका हर्ज नहीं करना चाहता था। वह रातको ही टैक्सी चलाता था। उसने कहा, लड़का बहुत बुरा हुआ है। वह पुलिसमें नहीं जाना चाहता, दूसरे पुलिसके हाथमें मामला जाएगा, तो वह इसे जल्दी नहीं छोड़ेगी। हर तरहसे इसे घुमा-फिराकर वह कोशिश करेगी कि बदमाशका मकान पहचानकर बता दे। इसमें अगर कहीं ऊंच-नीच हो गई, तो और भी मुश्किल। बोला, "तुम जानो। मैं तो तुम्हें अच्छा रास्ता बता रहा था।"

"मेरे ऊपर यही मेहरबानी करो कि जल्दीसे बम्बई स्टेशन पहुंचा दो। एक बार गाड़ीमें बैठ जाऊं, तो फिर सब ठीक हो जाएगा," गिरीशने खुशामद करते हुए कहा।

"ठीक है। ऐसा करो, तुम यहांसे टिकट खरीदो। बम्बई लेन्ट्रल चले जाओ। अभी गाड़ी जाएगी। पैसे भी कम लगेंगे।"

"तुम नहीं ले चलोगे?" गिरीशने अधीरतासे कहा।

"काहेको पैसे लुटानेपर तुले हो। ऐसा नहीं करते। मैं तुम्हें अच्छी सलाह दे रहा हूं। बम्बईमें रात-बिरात इस तरह घूमना ठीक नहीं और पैसेकी कीमत समझना अच्छी बात है।" टैक्सी ड्राइवर सचमुच गिरीशपर दया कर रहा था।

गिरीशने कहा, "ठीक है। यह लो अपने रुपये।" और एक नोट आगे बढ़ा दिया।

टैक्सीवाला बोला, "नहीं मैं रुपये नहीं लूंगा। तुम मेरे बच्चेके समान हो।"

गिरीशने जिद की, फिर भी टैक्सी-ड्राइवरने रुपये नहीं लिये। कह दिया, "तुम परदेशी हो और उसपर बच्चे। मुझे अफसोस है बम्बईमें तुम्हें इतनी तकलीफ उठानी पड़ी।"

गिरीश इससे बहुत भावित हुआ। जहां बुरे होते हैं वहां कुछ अच्छे भी होते हैं। टैक्सीवाला टैक्सीमें बैठ गया। गिरीश चल पड़ा। टैक्सी ड्राइवरने आवाज लगाई, "बेटे, सुनो।" गिरीश लौट पड़ा।

"एक बात है, इस समय तुम्हें दिल्लीवाली गाड़ी नहीं मिलेगी। जाना बेकार होगा।"

गिरीश सोचमें पड़ गया।

"रातमें यों घूमते फिरना भी ठीक नहीं। ऐसा करो, पासमें ही एक 'लॉज' है। रात भरके लिए ठहर जाओ। सवेरे जाना। क्या करूं, मेरा घर बहुत दूर है वरना अपने घरपर ठहरा जाता। कोई बात नहीं, 'लॉज' में भी कोई खतरा नहीं है।"

टैक्सीवाला उसे 'लॉज' में ठहरा गया। 'लॉज' के नौकरसे कह गया, इसे तड़के जगा देना।

गिरीश निश्चिंत होकर सो गया। बहुत थक गया था, इसलिए नींद भी गहरी आई।

लेकिन बात कुछ और ही थी। केहर गिरीशकी तलाशमें स्टेशन पहुंचा था। उसने सोचा था, नया लड़का है अगर जाएगा भी तो ज्यादासे ज्यादा स्टेशनपर ही जाएगा। वह स्टेशनपर गिरीशको न देख थोड़ी देर इंतजार करता रहा। वह निराश होकर लौटनेकी सोच ही रहा था, तभी एक टैक्सी आती दिखाई दी। उसने सोचा, क्या हर्ज है इस टैक्सीसे आने वालेको भी देख लिया जाए।

उसे गिरीशके मिलनेकी आशा बहुत कम रह गई थी और मन ही मन वह मलाल भी कर रहा था। फिर भी कोशिशमें हारना उसने नहीं सीखा था, इसी लिए उसने आने वाली टैक्सीको देखना ठीक समझा।

टैक्सी आकर रुकी। उसमें गिरीश था। अब केहर अंधेरेमें खड़ा वह सोचने लगा कि जैसे ही टैक्सी वापस लौटेगी वह गिरीशको फिर फंसा लेगा। यहां ज्यादा आदमी भी नहीं हैं जो डरकी बात हो। वह चुपचाप टैक्सी-से दो-तीन गजके फासलेपर अंधेरेमें खड़ा उनकी बातचीत सुनता रहा। जब टैक्सी गिरीशको लेकर वापस चली गई, तो वह समझ गया, पासमें ही जो 'लॉज' है उसीमें ठहराएगा। उसने दूरसे ही टैक्सीको वहां रुकते देख लिया। उसने फौरन मन ही मन कुछ तय किया और चल पड़ा।

गिरीश अगली सुबहको जगते ही नीचे उतरा। बाहर ही टैक्सी खड़ी थी। टैक्सीवालेने गिरीशके पास आकर कहा, "रात जो आपको यहां पहुंचा गए थे, उन्होंने मुझे भेजा है। कहा है जो रुपयेमें बम्बई स्टेशन तक आपको पहुंचा दूं।"

गिरीश की निगाहमें रातवाले टैक्सीवालेके प्रति मान बढ़ गया। कितना शरीफ है बेचारा! इतना खयाल किया मुझ परदेशीका! वह टैक्सीमें बैठ गया बोला, "चलो।"

(शेष पृष्ठ ४३ पर)

छोटी छोटी बातें—

—सिम्स

"कमाल है, भई, रुपेका मूल्य घट गया और दूधका दाम बढ़ गया!"

"हां, यार, दूधवाला भी चक्करमें है कि अब दूधमें पानी मिलाए या पानीमें दूध!"

kissekahani.com

और चोर की दाढ़ी में तिनके की तलाश शुरू हुई...
हमें खेद है, श्रीमतीजी, इस की दाढ़ी में तिनका नहीं निकला... अतः यह हरगिज़ चोर नहीं हो सकता!
अरे मूर्ख, तुमसे कुछ नहीं होगा, मैं अभी पुलिस को रिपोर्ट करती हूं!
हुं! श्रीमतीजी ने मशहूर मसल को भी झुठला दिया! खैर! आपने मेरे साथ जो नेकी की उसे मैं कभी नहीं भूल सकता!
लंबू, जरा कान में एक बात सुनो...
चुप-चुप...!
और फिर...
अरे बचाओ! यह क्या? तुमने मुझे दरिया में क्यों फेंक दिया?
इस लिए कि यह मसल भी मशहूर है कि 'नेकी कर दरिया में डाल!'
ठहरो, मैं आई!
भगवान के लिए बचाओ, मैं कबूल करता हूं कि मैं चोर हूं!

जीनेकी कला – ९

लो, याद ही नहीं रहा

— अलकारानी जैन

कहते हैं दो बौद्ध लामा आमने-सामनेकी पहाड़ियोंपर घोर तपस्या कर रहे थे। उन्होंने अपने मनको एकाग्र कर लिया था और शरीरको स्थिर। बरसों उन्हें तपस्या करते और मौन साधते बीत गए। एक दिन एक लामाने दूसरे लामासे पूछा– "क्यों, भई, अंडे खाते हो?" दूसरेने उत्तर दिया—"हां!"

"कच्चे या उबालकर?" "उबालकर!"

दोनों लामा फिर तपस्यामें लीन हो गए। इस छोटे-से सवाल-जवाबको भी बारह बरस बीत गए। तब फिर एक दिन पहले लामाने पूछा—"कच्चे या उबाल कर?"

दूसरे लामाने तुरंत उत्तर दिया– 'उबालकर।"

यह है याद रखनेका कमाल। अगर घरपर पढ़ा हुआ कोई पाठ या उसका कोई अंश तुम परीक्षा-भवनमें बैठकर भूल जाओ, तो तुम्हें जरूर इन लामाओंसे भारी ईर्ष्या होगी। तुम सोचते होगे कि अगर याद रखनेकी कोई कला या जादू तुम्हारे हाथ आ जाए, तो तुम भी अपनी कक्षामें अव्वल आ सकते हो। क्या स्मरण-शक्तिको बलवान बनानेके लिए कोई जादू या मंत्र होता है?

जरूरी बातें याद न रख पानेसे कभी कभी बड़े बड़े काम ठप हो जाते हैं। इसलिए मनोविज्ञानके पंडितोंने कुछ ऐसे मंत्र खोज निकाले हैं, जो जादूके भले ही न हों, लेकिन काम जादूकी तरह ही करते हैं।

इसे अकेली न छोड़ो

याद एक ऐसी नन्ही-मुन्नी बच्चीकी तरह है कि मां-बाप या भाई-बहनोंका साथ छूटते ही भीड़में खो जाती है। इसलिए किसी चीजको याद बनाए रखनेका सबसे पहला मंत्र है—'इसे अकेली न छोड़ो'। उसके साथ कुछ ऐसी सहेलियां या संगी-साथी जोड़ दो, जो तुम्हें ज्यादा याद रहते हैं। यह भी ध्यान रखना है कि जिन संगी-साथियोंको तुम उस नन्ही-मुन्नी बच्चीके साथ करते हो वे निरे बौघ.वसंत न हों। उन्हें थोड़ा-सा हंसोड़ होना चाहिए, जिससे वे उस नन्ही-मुन्नीका दिल बहला सकें।

अब आओ, इसका एक उदाहरण लें:

मान लो तुम्हें यह याद रखना है कि 'स्वाधीनताकी भारतीय कल्पना' श्री विद्यानिवास मिश्रका लेख है। यह एक बहुत जरूरी बात याद रखनेकी है, नहीं तो परीक्षा पत्रका एक-डेढ़ नंबर गया। अब यदि तुम यह कल्पना करो कि मास्टर साहब तुम्हें मिश्रजीके इस लेखपर लैक्चर दे रहे हैं और तुम उनको दिखा दिखाकर मिसरी चाट रहे हो और मास्टर साहब अपने लैक्चरके बीच बीचमें दांत पीस पीसकर तुम्हारी तरफ लाल लाल आंखोंसे देख रहे हैं— तो सारी कक्षाको हंसनेका मसाला मिल जाएगा। (ध्यान रखना ऐसे बदतमीजीके काम सचमुचमें करनेके नहीं होते!) मिश्रके साथ मिसरीका बड़े निकटका संबंध है और कक्षामें मिसरी चाटनेका संबंध तुम्हारी स्वाधीनताकी ऊटपटांग कल्पनासे जो है, भले ही वह भारतीय कल्पना न हो, मगर तुम स्वयं तो भारतीय हो ही।

बस, इस मजाकिया सीनकी कल्पना मात्र ही तुम्हें यह याद रखनेके लिए काफी होगी कि 'स्वाधीनताकी भारतीय कल्पना' शीर्षक लेखके लेखक श्री मिश्र हैं, जिनके मस्तिष्कमें विद्या निवास करती है।

आरंभमें हर याद रखने वाली बातके साथ इस तरहके संबंध मानसिक रूपसे जोड़ना देरतलब हो सकता है। लेकिन अभ्यास करनेसे न केवल तुम्हारी कल्पना-शक्ति प्रखर होगी, बल्कि तुम देखोगे कि प्लासीकी लड़ाई किस सन्‌में हुई थी यह याद रखनेके लिए १८५७ का प्रथम स्वाधीनता संघ.म याद रखना काफी है—क्योंकि इससे यह याद रखना सरल है कि प्लासीका युद्ध तथाकथित गदरसे पूरे सौ साल पहले हुआ था। यद्यपि इसके साथ कोई विनोदपूर्ण तथ्य जुड़ा हुआ नहीं है, और हर जगह यह संभव भी नहीं है, लेकिन इससे यह सिद्ध हो जाता है

कि यादको कभी अकेली न छोड़ो—जब तक उसके साथ कुछ संगी-साथी लगे रहेंगे, वह तुम्हारे भेजेमें बनी रहेगी।

इसके कपड़े बदलते रहो

यादको बनाए रखनेका दूसरा कारगर मंत्र है उसे ताजा बनाए रखना। क्या तुम अपने किसी ऐसे साथीको जानते हो, जिसने परीक्षाके दिनोंमें रात-दिन एक करके मेहनत की हो, परीक्षा में भी उसके अच्छे नंबर आए हों, लेकिन अगली कक्षामें पहुंचते न पहुंचते वह सब पढ़ा-पढ़ाया भूल गया हो? देखो कहीं तुम स्वयं ही तो ऐसे नहीं हो।

इसका कारण है कि तुम्हारे साथीने या तुमने समय आनेपर याद तो बहुत कुछ किया, लेकिन बादमें उसके कपड़े नहीं बदले—यानी उसे कभी ताजादम नहीं किया।

उदाहरणके लिए, यह याद रखना परीक्षाके लिए तो काफी है कि अकबरका जन्म १५४२ में हुआ था, लेकिन बादमें भी अगर अपनी इस याददाश्तको बनाए रखना है, तो इसके लिए यह तो आवश्यक है ही, कि १५४२ में अकबर महान्‌के पिताराम किन मुसीबतोंमें से गुजर रहे थे, पर यह भी जरूरी है कि अकबरके जीवनके बारेमें कोई एक छोटी-मोटी सस्ती पुस्तक पढ़ डाली जाए। इससे न केवल अकबरकी जन्मतिथिकी याद रखना सरल हो जाएगा, बल्कि तुम्हारी याददाश्तको नए कपड़े मिलेंगे और वह ताजी बनी रहेगी।

यह तो सभी जानते हैं कि किसी याद रखने वाली बातको जितनी बार दोहराया जाएगा, उतनी ही वह ज्यादा याद रहेगी। लेकिन एक ही बातको बार बार दोहराना बोर भी कर सकता है और जहां बोरडम शुरू हुई कि बातको याद रखनेका उत्साह ही जाता रहा। लेकिन उसी बातके बारेमें नए नए तथ्योंकी जानकारी प्राप्त करते रहना बोर नहीं करता और यादको ताजा बनाए रखनेका यह तरीका अधिक उपयोगी भी है।

किसी भी कक्षाकी पाठ्य पुस्तक—चाहे वह कितनी ही कठिन क्यों न हो— उस विद्यार्थीके लिए सुगम होती है, जो उसमें दिए हुए विषयों और लेखकोंकी अन्य पुस्तकें पढ़नेमें भी रुचि रखता है। ऐसा करनेसे परीक्षा भवनमें, प्रश्नोंके उत्तर लिखते समय, जितना मसाला उसके मस्तिष्कमें होगा, न ही उतना समय होगा, न कापियां। वह जो कुछ लिखेगा, मन ही मन चुनकर सारपूर्ण बातें लिखेगा और सबसे ज्यादा नंबर पाएगा। अगर वह अपनी पाठ्य पुस्तकसे ही उसमें दिए हुए विषयोंका संपूर्ण ज्ञान प्राप्त करना चाहेगा, तो उसका ज्ञान विस्तृत नहीं हो पाएगा — साथ ही उसे अपनी याददाश्तपर जरूरतसे ज्यादा बोझ डालना पड़ेगा।

वर्षके आरंभमें ही, पाठ्य-क्रम शुरू होते ही इस तरहकी आदत डाल लेना विद्यार्थियोंकी पहली पंक्तिमें कूदकर खड़े हो जानेके बराबर है। रटनेकी क्रिया बंदूककी उस गोलीके बराबर है, जो एक बार परीक्षा भवनमें छूटनेके बाद नाकाम हो जाती है।

ऐसे बदतमीजोंके काम सचमुचमें करनेके नहीं होते

इसे छोटी न समझो

अगर तुम्हारे या तुम्हारे मित्रोंके छोटे छोटे भाई-बहन हैं, तो तुम ध्यानसे किसी समय देखोगे कि वे इस बातसे नफरत करते हैं कि उन्हें छोटा समझा जाए। वे प्यार जरूर चाहते हैं, लेकिन किसीसे कम भी रहना नहीं चाहते। अगर तुम उन्हें छोटा समझने और उनकी ओरसे उदासीन रहनेकी हिमाकत करोगे, तो वे तुम्हारे पाससे भाग जाएंगे। इसके विपरीत, अगर तुम उन्हें दूसरी बातोंसे ज्यादा महत्व दोगे, तो वे तुम्हारे आसपास ही मंडराते रहने की कोशिश करेंगे।

यही बात याद रखने वाली बातोंके बारेमें है। जिस बातको, तथ्यको, घटनाको, पाठको तुम याद रखना चाहते हो उसके बारेमें केवल यह चिंता रखनेसे कि यदि वह याद नहीं रही तो पिटाई होगी या नंबर कम आएंगे, वह याद नहीं रहेगी। चिंता रखना या महत्व समझना दोनों अलग अलग बातें हैं। चिंता तुम उसकी नहीं रखते, अपनी रखते हो कि तुम्हारा क्या होगा। जरूरत इस बातकी है कि तुम स्वयं उस बात या तथ्यका महत्व समझो। तुम्हें लगे कि वास्तवमें यह चीज याद रखने लायक है क्योंकि इसका जीवनमें बड़ा महत्व है। इसके जाने बिना, इसको याद रखे बिना तुम्हारे जीवनके दूसरे कई काम या तो बिगड़ जाएंगे, या उनपर गलत प्रभाव पड़ेगा।

उदाहरणके लिए, हम फिर उसी लेखको ले लें, जिसकी चर्चा हमने आरंभमें की थी। इस लेखकी बातें तुम्हें केवल इसलिए ही याद नहीं रखनी हैं कि प्रश्न-पत्रमें इसके ऊपर कोई प्रश्न आनेकी संभावना है। तुम जानते हो कि स्वाधीनता कहनेमें एक सरल शब्द है, जिसके अर्थ कोई भी बता देगा, लेकिन वास्तवमें यह बड़ा विवादास्पद विषय है। अगर तुम स्वाधीन हो तो इसके ये अर्थ नहीं कि तुम अपने साथीकी कोई चीज जब चाहे इस्तेमाल कर

(शेष पृष्ठ ५१ पर)

पुष्कलके फ्लैटका गेट लोहेका था।

गेटपर एक तख्ती लगी थी, जिसपर लिखा था—कुत्तेसे सावधान। और सचमुच कंपाउंड-के अंदर लानमें एक खतरनाक-सा अलसेशियन लाल जीभ निकाल हांफता रहता था। उसकी गर्दनमें पट्टा तो होता, मगर जंजीर नहीं।

आज तक लेकिन जितेनको उससे सावधान रहनेकी कोई तुक नजर न आई थी। बड़ा समझ-दार कुत्ता था। देखनेमें खतरनाक हुआ तो क्या, है तो 'हनी' ही—ठीक अपने नामकी तरह मीठा। दिन भर अहातेमें घूमता-फिरता—शेरकी तरह। कोई गेटपर आता, तो बाजारू कुत्तोंकी तरह भौंकनेके बजाय खामोशीसे अंदर घूम जाता और किसी नौकरकी धोती खींचता और उसे बाहर ले आता। अखबारवाला आता, तो उससे अखबार लेकर पुष्कलके डैडीके कमरेमें रख देता। पोस्ट-मैन 'पराग' लेकर आता, तो हनी उसे दांतोंमें दबाकर पुष्कलके कमरेकी तरफ मुड़ जाता।

जितेनको तो उसने अच्छी तरह पहचान लिया था। जब भी वह पुष्कलसे मिलने उसके घर जाता, हनी बड़े प्यारसे अपनी झंडी हिलाने लगता—यानी चॉकलेट दो और जितेन मुस्करा-कर उसकी तरफ टॉफी या बिस्कुटका टुकड़ा उछाल देता।

अभी भी यही हुआ।

हनी चॉकलेटका रैपर निकालनेकी कोशिश

कहानी

कुत्ते से सावधान

kissekahani.com

कर रहा था
हुआ, पुष्कल
बरामदे
की बस आने
उसकी झंझ
आवाजें आ
देख रहा है—
कमरेमें,
सामनेकी दी
कैलेंडर टंगा
बच्चे आंखें
उनके पीछे
पकड़नेकी ल
गोश-सा, जि
उसने के
पुष्कलसे कह
आऊंगा इसे!
पुष्कल
"हां, भई, श
लाऊंगा—मह
है, जितने चा
जितेन
तभी बा
बैग संभालने
आया। दोनों

•

पुष्कलके
गली घूमती

उसने हल्का-सा नाश्ता किया और पुष्कलके घरकी ओर बढ़ गया।

पुष्कल घरमें नहीं था। हनीने अपनी दुम हिलाई और जितेन टॉफीका एक टुकड़ा हनीकी तरफ उछालता हुआ सीढ़ियां चढ़ने लगा।

पुष्कलकी मम्मीने उसे बड़े प्यारसे बैठाया और बोली, "पुष्कल अभी आ जाता है। जरा बाजार तक गया है अंडे लाने।"

जितेन इस संबंधमें कुछ नहीं बोला। उसने सिर्फ इतना कहा : "जब तक पुष्कल आए, मैं उसीके कमरेमें बैठता हूं।"

पुष्कलकी मम्मीने बड़ी खुशीसे कहा, "जाओ बैठो, अब तो पुष्कल आता ही होगा।"

और जितेन हनीकी पीठ सहलाता हुआ पुष्कलके कमरेमें आ गया। हनी लगातार अपनी झंडी हिला रहा था, मगर फिलहाल जितेनके पास कुछ नहीं था। कुछ देर तक वह यों ही किताबें उलटता रहा, फिर उसने कैलेंडरपर भरपूर नजर डाली—खरगोशके दो सफेद सफेद...

और तभी उसकी आंखें भटक गईं। कैलेंडरकी ठीक बगलमें एक छोटा-सा रैक था, जिसमें दो-तीन सजावटके सामान रखे हुए थे। मगर उसकी आंख एक दूसरी ही चीजपर गड़ी थी। वह काले रंगका एक छोटा-सा मगर कीमती माउथ-ऑर्गन था, जो ट्यूबकी रोशनीमें चमक रहा था—चम-चम...चरारम...चरारम...

जितेनकी आंखोंमें हल्की-सी चमक आ गई। माउथ-ऑर्गन बजानेका उसे बहुत शौक था। वह बहुत देर तक उसे देखता रहा। फिर उसने दरवाजेकी तरफ नजर डाली। एक नौकर बरामदेमें कोई काम कर रहा था। उसका दिल धड़कने लगा। वह उठकर खड़ा हो गया। अब वह कैलेंडरके पास खड़ा बड़े गौरसे कैलेंडरको देख रहा था। मगर उसका ध्यान काम करते हुए नौकरपर ही था। उसने कनखियोंसे दरवाजेकी तरफ देखा। बरामदेमें अब कोई नहीं था।

उसने अगल-बगलकी खिड़कियोंमें एक सतर्क दृष्टि डाली और जल्दीसे माउथ-ऑर्गन अपने नेकरकी जेबमें डाल लिया।

तभी अचानक हनी बड़ी जोरसे भौंका। जितेन चौंककर पलटा, तो हनी उसे खूनी आंखोंसे घूरता हुआ उसकी ओर बढ़ रहा था। जितेनने सीटी बजानी चाही, मगर गला सूख रहा था। उधर हनी अचानक अपने दोनों पिछले पैरोंपर खड़ा होकर और जोरसे भौंकने लगा।

जितेनको कोई उपाय नहीं सूझा। उसने जल्दीसे ऑर्गन निकालकर रैकपर रख दिया। मगर फिर भी हनी शांत न हुआ।

जितेनके माथेपर पसीना चुहचुहा आया।

तब तक पुष्कलकी मम्मी और कुछ नौकर दरवाजे तक आ चुके थे। मम्मीने हनीको पुचकारा, नौकरोंने आवाजें दीं। मगर वह क्रोधमें जितेनकी ओर मुंह उठाए भौंकता रहा।

जितेन मौका देखकर पीछेकी ओर खिसकता हुआ कमरेसे बाहर निकल आया। हनी भी भौंकता हुआ उसकी ओर बढ़ा। जितेनकी हालत खराब हो रही थी मगर जब तक कि मम्मी जितेनको दौड़नेसे रोकतीं, वह मौका पाकर पूरी तेजीसे बाहरकी तरफ भागा। हनी भी उछलकर उसके पीछे दौड़ा।

खैर हुई कि गेट खुला था और जितेन कंपाउंडसे बाहर निकलनेमें सफल हो गया। हनी कंपाउंडमें ही रुक गया और भौंकने लगा।

तभी पुष्कल साइकिलसे उतरा। उसने मम्मीको देखा, जो हनीको डांट रही थीं। "क्यों, हनी क्यों भौंक रहा है?" उसने जितेनसे पूछा।

जितेन थूक निगलकर बोला, "प-पता नहीं—मैं जरा कैलेंडर देख रहा था कि बस अचानक ही भौंकने लगा।" उसने हनीकी तरफ देखा, जो अब शांत हो चुका था।

"ओह, समझा!" पुष्कल बोला, "तुमने जरूर कैलेंडर उतारनेकी कोशिश की होगी।"

जितेनकी जानमें जान आई। इज्जत बची, उसने सोचा और जल्दीसे 'हां' कर दी।

"मैंने कहा न!" पुष्कलकी मम्मी बोली, "पुष्कलकी अनुपस्थितिमें कोई पुष्कलकी चीजें छूता है तो यह टूट पड़ता है।"

जितेन कुछ नहीं बोला।

"अच्छा, चलो अंदर," पुष्कलने कहा, "तुम्हें कैलेंडर दे दूं।"

जितेनने कनखियोंसे हनीको देखा, वह धीरे-धीरे अपनी दुम हिला रहा था। पुष्कल बिस्कुटके लिए पाकिट थपथपाने लगा और जितेनने उस तख्तीपर अर्थपूर्ण दृष्टि डाली, जिसपर लिखा था—'कुत्तेसे सावधान'। जितेनको लगा कि वहां कुत्तेकी जगह स्वयं उसका नाम लिखा है। ●

अद्भुत
बजाने

इन चित्रोंमें तुम
बुलबुल तरंग
नाम मास्टर पुरुषो
अपने इस बुल
तमका इतना अधि
जानी धुन भी मिनि
उसके गलेमें एक
वह गीत गाता हुआ
बजाता है कि दर्श
देखता ही रह जा
उपयुक्त स्थलोंपर
है। यह मुसकराह
साथ कुछ इस तर
दर्शक गाना-बजाना
गुणोंपर एक साथ
'जीना बादाम
'अम्मां, मैं तो सी
'चाहूंगा मैं तुझे सांझ
गीत है, जिन्हें सुनने
सुनते हैं। साथ

बुलबुल तरंग

अद्भुत बुलबुल तरंग बजाने वाला यह बालक

मास्टर पुरुषोत्तम

—टी. एन. मिश्र

इन चित्रोंमें तुम जिस बालकको बड़े मनोयोगसे बुलबुल तरंग बजाते हुए देख रहे हो, उसका नाम मास्टर पुरुषोत्तम है।

अपने इस बुलबुल तरंगपर मास्टर पुरुषोत्तमका इतना अधिकार है कि वह प्रायः हर अनजानी धुन भी मिनिटोंमें इसपर निकाल लेता है। उसके गलेमें एक विशेष प्रकारकी मिठास है। वह गीत गाता हुआ बुलबुल तरंगको इस तरह बजाता है कि दर्शक उसके मुंह और हाथोंको देखता ही रह जाता है। गानेके बीच बीचमें उपयुक्त स्थलोंपर मुसकरानेकी उसकी आदत है। यह मुसकराहट उसके गानेकी पंक्तियोंके साथ कुछ इस तरह मिली-जुली होती है कि दर्शक गाना-बजाना और मुसकराना इन तीनों गुणोंपर एक साथ मुग्ध हो उठता है।

'चीना बादाम ले लो, चीना बादाम'—'अम्मा, मैं तो सीखूंगा गोली चलाना'—'चाहूंगा मैं तुझे सांझ-सवेरे' आदि उसके कुछ ऐसे गीत हैं, जिन्हें सुनने वाले बार बार बड़े आग्रहसे सुनते हैं। साथ ही 'रफ्ता रफ्ता' शीर्षक फिल्मी गाना उसका प्रसिद्ध गाना बन गया है।

इस होनहार बालकका जन्म २६ जनवरी सन् १९५४ ई. को बंबईमें हुआ था। इसके पिताका नाम श्री रामलाल है। अपने चौथे ही वर्षसे वह बुलबुल तरंगपर निरंतर अभ्यास करता आ रहा है। शास्त्रीय और सरल दोनों ही प्रकारके गीत वह अपनी बुलबुल तरंगपर समान कुशलताके साथ गाता है। फिल्म काबुलीवालामें स्वर्गीय विमलरायने इसे एक रवीन्द्र गीत गानेका अवसर दिया था। 'लिटिल थिएटर एसोसिएशन' ने सन १९६२ में उसे सम्मानित किया था। शास्त्रीय संगीतकी विद्या वह पंडित लक्ष्मणप्रसाद जयपुरवालोंसे ग्रहण कर रहा है।

सन ६५ के अंतके दिनोंमें एक कार्यक्रममें बालक पुरुषोत्तमको दर्शकोंकी ओरसे ५१ रुपये पुरस्कार स्वरूप मिले थे, जो उसने उसी समय नागरिक प्रतिरक्षा समितिको दान कर दिए थे।

अब यह बालक म्युनिसिपल स्कूल, जोगेश्वरी बंबई, में पढ़ रहा है, ऐसे होनहार बालकको 'पराग' परिवारकी शुभकामनाएं अर्पित हैं। ●

बुलबुल तरंगपर मास्टर पुरुषोत्तम

जब पुरुषोत्तम चार वर्षका था

kissekahani.com

कहानी

वे दिन भी क्या दिन थे!

घटना महत्वपूर्ण थी वरना कुम्मी अपनी डायरीमें उसे क्यों लिखती। अपनी डायरीमें उसने १७ मई सन् २१५५ की रातको लिखा : 'आज रोहितको सचमुचकी एक पुस्तक मिली है।'

वह पुस्तक बहुत पुरानी थी। कुम्मीके दादाने बताया था कि जब वह बहुत छोटे थे तब उनके दादाने कहा था कि उनके जमानेमें सारी कहानियां कागजपर छपती थीं और पढ़ी जाती थीं। पुस्तकोंमें पृष्ठ होते थे जिनपर कहानियां छपी होती थीं और हर पृष्ठ पढ़नेके पश्चात् दूसरा पृष्ठ पलटकर आगे पढ़ना होता था। सारे शब्द स्थिर रहते थे, चलते नहीं थे जैसे आजकल पर्देपर चलते हैं।

रोहितने कहा था, "कितनी पुस्तकें बेकार जाती होंगी। एक बार पढ़ीं और फिर बेकार हो गईं। अब तो हमारे टेलीविजनके पर्देपर न जाने कितनी पुस्तकोंकी सामग्री आ जाती है और फिर भी यह पुस्तक नईकी नई रहती है।"

कुम्मीने भी रोहितकी हां में हां मिलाई। उसने पूछा, "तुम्हें वह पुस्तक कहां मिली?"

रोहितने बताया, "अपने घरमें। एक पुराना डिब्बा कहीं दबा पड़ा था। उसीको फेंक रहे थे कि उसमेंसे यह पुस्तक मिली।"

"इसमें क्या लिखा है?"

"स्कूलोंके बारेमें लिखा है।"

"स्कूल?" कुम्मीने प्रश्न किया। "उसके विषयमें लिखनेको है ही क्या? हर विद्यार्थीके घरपर एक मशीन होती है जिसमें टेलीविजनकी तरहका एक पर्दा होता है। रोज नियमित रूपसे उसके सामने बैठकर हमें वह सब याद करना होता है जो वह मशीन हमें बताती है। सारा होम-वर्क करके दूसरे दिन उसी मशीनमें डाल देना होता है। हमारी गलतियां बताकर फिर वह हमें समझाती है। एक विषय पूरा होनेपर वही मशीन हमारी परीक्षा लेकर हमें आगे पढ़ाना आरंभ कर देती है..." कहते कहते कुम्मी थक गई थी। अंतमें बोली, "कितना बोर होता है यह सारा स्कूलका काम!"

रोहित मुस्कराता हुआ उसकी बातें सुन रहा था—"अरे बुद्धू, जिस प्रकारके स्कूलका वर्णन

इस पुस्तकमें है
इसमें तो उन स्
पहले होते थे।"

कुम्मीके म
"फिर भी उनके
अध्यापक तो हो

कुम्मीको
उसके भूगोलमें
थीं, तो उसकी म
था। तब एक अ
मशीनके पुर्जे पुर्जे
मन ही मन यह
इस बोर करने
पाए, तो उसे हमे
लेकिन उस आद
उसकी मांको बत
भूगोलकी चक्की
आपकी लड़कीके
गया था। मैंने अब
है, सो आशा है अ

और कुम्मीक
सीखने बैठ जाना
उस मशीनी-अध्या

इस पुस्तकमें है, वह इससे भिन्न होता था। इसमें तो उन स्कूलोंके बारेमें लिखा है जो सदियों पहले होते थे।"

कुम्मीके मनमें कुछ उत्सुकता जगी, बोली, "फिर भी उनके यहां इसी प्रकार मशीनके बने अध्यापक तो होते ही होंगे?"

कुम्मीको याद आया कि एक बार जब उसके भूगोलमें रोज वही गलतियां होने लगी थीं, तो उसकी मांने मुहल्लेके अध्यक्षको बताया था। तब एक आदमी आया था और उसने उस मशीनके पुर्जे पुर्जे अलग कर दिए थे। तब उसने मन ही मन यह मनाया था कि वह आदमी इस बोर करने वाले अध्यापकको पुनः जोड़ न पाए, तो उसे हमेशाके लिए छुट्टी मिल जाए। लेकिन उस आदमीने मशीनको फिरसे जोड़कर उसकी मांको बताया था— 'लगता है मशीनके भूगोलकी चक्की कुछ तेज रफ्तारपर थी, सो आपकी लड़कीके लिए उसे समझना कठिन हो गया था। मैंने अब उसकी गति कुछ धीमी कर दी है, सो आशा है अब ठीक रहेगा।'

और कुम्मीको उसी समय भूगोलका सबक सीखने बैठ जाना पड़ा था। मन ही मन वह उस मशीनी-अध्यापकको कोसती रही थी।

रोहितने उसकी विचारधाराको तोड़ा। बोला, "हां, तब अध्यापक तो होते थे परंतु मशीन नहीं, स्त्रियां और पुरुष होते थे।"

"क्या कहा? कहीं कोई स्त्री या पुरुष इतने सारे विषय हमें सिखा सकता है?"

"क्यों नहीं? वह बच्चोंको सारे विषय समझाते थे, गृहकार्य देते थे और प्रश्न पूछते थे। वह बच्चोंके घरपर नहीं जाते थे। बच्चे एक विशेष भवनमें जाते थे जिसे स्कूल कहते थे।"

कुम्मीका अगला प्रश्न था, "तो क्या सब बच्चे एक ही सबक सीखते थे?"

"हां, एक आयुके बच्चे एक साथ बैठते थे।"

—आईजक असीमोव

"लेकिन मां कहती हैं कि हर मशीनी अध्यापक हर बच्चेके मस्तिष्कके अनुसार पढ़ाता है, तो उस समय यह कैसे संभव होता था?"

"तब वह इस प्रकार नहीं करते थे। रहने दो तुम्हारी इच्छा नहीं है, तो मैं वह पुस्तक तुम्हें नहीं दूंगा।"

कुम्मी झट बोली, "नहीं नहीं, मैं उसे पढ़ना चाहूंगी कि तब स्कूल कैसे होते थे। कितनी अजीब अजीब बातें जाननेको मिलेंगी!'

इतनेमें अंदरसे मांकी आवाज सुनकर कुम्मी बोली, "लगता है सबकका समय हो गया है।"

रोहित भी उठा और अपने घरकी ओर चला गया। कुम्मी अपने घरकी ओर चली गई। अंदर मशीन आगेका सबक देनेको तैयार थी। मशीनसे आवाज आनी आरंभ हो गई—'सबसे पहले आज तुम्हें गणित सीखना है। कलका होम वर्क छेदमें डालो...'

कुम्मीने वैसा ही किया। वह सोच रही थी कि कितने अच्छे होते होंगे वे पुराने स्कूल जहां एक ही आयुके सारे बच्चे हंसते और खेलते-कूदते स्कूल जाते होंगे...और पढ़ाने वाले पुरुष और स्त्रियां होते होंगे...

इतनेमें मशीनसे स्वर आना आरंभ हो गया था और पर्देपर चलते हुए अक्षर एवं अंक आने शुरू हो गए थे।

और कुम्मी सोच रही थी कि तब स्कूल जानेमें कितना आनंद आता होगा, कितने खुश रहते होंगे सारे बच्चे! (रूपांतर : ब्रह्मदेव)

चोर बिल्ली

• छाया : मेहताब किरण

बच्चो, पिछले अंकमें तुमने जासूस बिल्लीकी करामात देखी थी। जरूर मजा आया होगा। लो, अब देखो इन पृष्ठोंमें चोर बिल्लीकी चतुराई जिसे पकड़नेमें अच्छेसे अच्छे जासूस भी असफल रहे।

पक्की चोर !

देख ले, देख ले, खूब इधर-उधर ताक-झांक कर ले!

अब मौका है दावं मारने का!

अरे भ
घर से

थत्तेरे
तो

ाब किरण

अंकमें तुमने
करामात
ग्या आया
इन पृष्ठोंमें
ुराई जिसे
ले जासुस

नकर इस में उत्तम भोज्य
पदार्थ है—यानी चूहा!

अरे भई, निकल के आ
घर से—आ घर से!

दुनिया की रौनक देख
फिर से—देख फिर से!

ारने का!

धत्तेरे की—यह कम्बख्त
तो रबड़ का निकला!

एक विदेशी पर्यटकने भारत संबंधी अपने एक संस्मरणमें लिखा कि 'भारत मेलों और त्यौहारोंका देश है।' बात सही भी है। शायद ही कोई ऐसा महीना बीतता हो, जब देशके किसी न किसी भागमें कोई त्यौहार न मनाया जाता हो और कोई मेला न लगता हो। दशहरा, दीवाली, होली, नया वर्ष, बसंत आदि तो ऐसे पर्व हैं, जिन अवसरोंपर समूचे भारतमें उत्सव और मेलोंकी रौनक रहती ही है। इनके अलावा विभिन्न राज्योंकी अपनी स्थितिके अनुसार अनेक छोटे-बड़े पर्व ऐसे मनाए जाते हैं जब मेले लगते हैं। 'स्थिति' का मतलब है—भौगोलिक, मौसम, फसलकी कटाई आदिसे। उदाहरणके लिए जब न ज्यादा गरमी पड़ती है न ज्यादा सर्दी, धूप सुहानी लगती है, फल और फूलोंसे पेड़ लद जाते हैं, खेतोंमें अनाजकी सुनहरी बालियां लहराती हैं, लोगोंमें उमंग और उत्साह होता है, तब किसी न किसी बहाने धार्मिक अथवा सामाजिक उत्सव मनाए जाते हैं—मेले लगते हैं। लोक-संगीत और लोक-नृत्यका प्रदर्शन होता है। नर-नारियां अच्छे अच्छे वस्त्रोंसे सज्जित होकर उनमें भाग लेते हैं। बच्चे? बच्चोंका कहना ही क्या है! उनकी तो चांदी होती है। उन्हें मेलोंमें शामिल होनेके लिए यात्रा करनेको मिलती है, मनचाहे खिलौने खरीदनेको मिलते हैं, तरह

(शेष पृष्ठ ५५ पर)

छुट्टियां और मेले

लो हमने आकाश छू लिया! (छाया : जे. एस. पारीक)

ज्यादा सर्दी,
फूलोंसे पेड़
हनी बालियां
ग्राह होता है,
थवा सामा-
लगते हैं।
न होता है।
ज्जत होकर
ा कहना ही
उन्हें मेलोंमें
मिलती है,
हैं, तरह

यहां से मेला देखने का मजा और ही है! (छाया : जे. एस. धारीक)

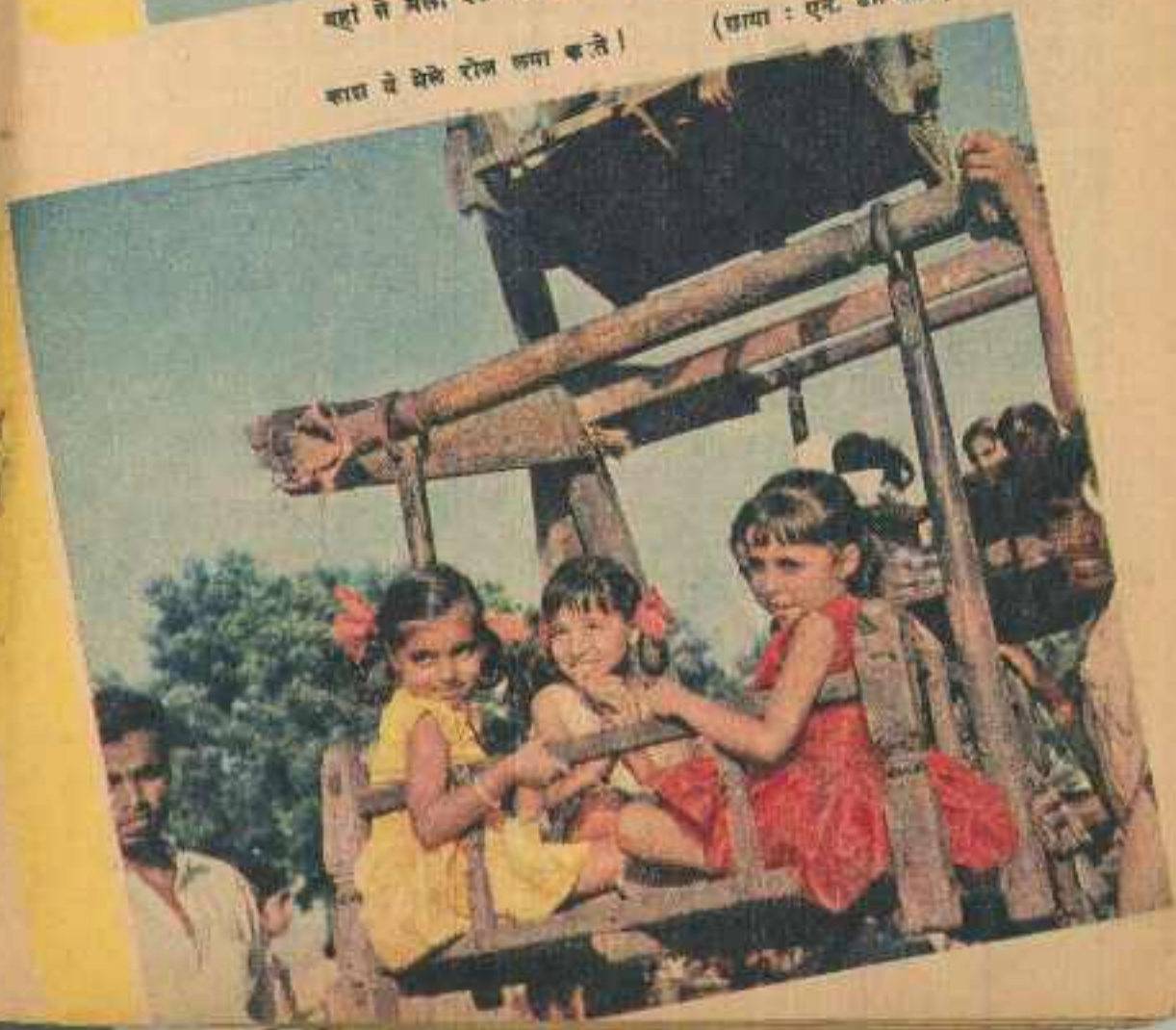

काश ये झूले रोज लगा करते! (छाया : एन. डी. शर्मा)

बलिदान दिवस (१२ जून) के अवसर पर

सच्चाई के लिए प्राण देने वाले गुरु अर्जुन देव

सिखोंके दस गुरु हुए हैं। इनमेंसे पहले, गुरु नानक देव और दसवें, गुरु गोविन्दसिंहका नाम बहुत मशहूर है। अभी पिछले दिनों इन्हीं दसवें गुरुकी तीन सौ साला जयंती हमारे सारे देशमें बड़ी धूमधामसे मनाई गई थी। इन दो गुरुओंके अलावा जिनका नाम और काम बहुत महत्वपूर्ण है वह थे पांचवें गुरु, गुरु अर्जुन देव।

गुरु अर्जुनका जन्म चौथे गुरु, गुरु रामदासके घर १५ अप्रैल सन् १५६३ को पंजाबके गोइन्दवाल नामक स्थानपर हुआ था। अपने पिताके स्वर्गधाम सिधारनेपर मात्र १८ वर्षकी आयुमें इन्हें गुरु बनाया गया और इस तरह उनके सिरपर एक बहुत बड़ी जिम्मेदारी सौंप दी गई। चौथे गुरु, गुरु रामदासने उस नगरकी नींव रख दी थी जो आगे चलकर अमृतसरके नामसे मशहूर हुआ। परंतु आज भी अमृतसर इसलिए नहीं मशहूर है कि वह एक बड़ा शहर है, बल्कि वहांपर एक तालाबके, जिसे अमृत सरोवर कहते हैं, बीचोंबीच एक मंदिर बना हुआ है, जो हरि मंदिरके नामसे विख्यात है और सिखोंका सबसे बड़ा तीर्थ स्थान है। इस हरि मंदिरको गुरु अर्जुन देवने बनवाया था। और इसकी नींव उन्होंने रखवाई थी एक मुसलमान सूफी संत मियां मीरसे। इस मंदिरके उन्होंने चार दरवाजे रखे। जिसका अर्थ था कि यह मंदिर सभी जातियों, वर्णों और धर्मोंके लिए खुला हुआ है।

अमृतसरके हरि मंदिरके अलावा गुरु अर्जुन देवने तरन तारन, करतारपुर आदि नगर बसाए तथा लाहौरमें एक इमारत तथा एक बावड़ी भी बनवाई।

गुरु अर्जुनके जीवनका सबसे महत्वपूर्ण कार्य है उस ग्रंथका संपादन करना जो आज सिखोंकी पूज्य धार्मिक पुस्तक है और श्रद्धालु जिसे 'गुरु ग्रंथ साहब' कहकर पुकारते हैं। गुरु अर्जुन अपने शिष्योंके लिए एक ऐसी धार्मिक पुस्तक बनाना चाहते थे, जो उस कठिन समयमें उनका मार्ग-दर्शन कर सके। साथ ही जो सामान्य जनताकी बोलने वाली भाषामें हो। उन्होंने जिस ग्रंथका संपादन किया, उसमें अपने पहलेके चार गुरुओं तथा अपनी वाणी ली। उनके अलावा देशके अलग अलग भागोंमें फैले हुए १५ भक्तोंकी रचनाएं भी ली गईं। इन भक्तोंके नाम हैं– कबीर, नाम देव, रविदास, रामानन्द, जय देव, त्रिलोचन, धन्ना, सैण, पीपा, भीखण, सदना, परमानन्द, सूरदास, वेणी और शेख फरीद। इन भक्तोंके अतिरिक्त १४ अन्य भक्तों, जिन्हें भट्ट कहा जाता है, की रचनाएं भी ग्रंथ साहबमें संग्रहीत की गईं। इस प्रकार ग्रंथ साहबमें भारतके लगभग सभी भागोंके भक्तोंकी रचनाओंको स्थान प्राप्त हुआ। इसमें हिंदू भी थे और मुसलमान भी, उच्च कही जाने वाली जातियोंके लोग भी थे और उनकी वाणी भी थी जिन्हें नीची जाति समझा जाता था। आजकल हम लोग अपने देशमें भावात्मक एकताकी बहुत-सी बातें करते हैं। परंतु गुरु अर्जुनने आजसे लगभग ३५० साल पहले वह काम किया था जो हमारे देशकी भावात्मक एकताकी दिशामें महत्वपूर्ण कदम था।

गुरु अर्जुन देव एक बहुत बड़े कवि थे। गुरु ग्रंथ साहबमें लगभग ५००० छंद हैं। उनमेंसे लगभग २००० गुरु अर्जुन द्वारा लिखे हुए हैं। गुरु अर्जुनकी कविता बहुत सरल भाषामें है तथा भक्तिभावसे भरी हुई है। उनकी सबसे प्रसिद्ध रचनाका नाम सुखमनी है, जिसका अर्थ है सुखोंकी मणि। गुरु वाणीसे प्रेम करने वाले लाखों परिवारोंमें नित्य सुखमनीका पाठ होता है। इस रचनाको पढ़कर हमारे मनको शांति तो मिलती

ही है इस बातकी भी शिक्षा मिलती है कि मनुष्यकी सेवा ही ईश्वरकी सबसे बड़ी पूजा है। जो व्यक्ति मनुष्यसे घृणा करता है वह ईश्वरका सच्चा भक्त नहीं हो सकता।

गुरु अर्जुन कहते थे कि संसारके सभी लोग बराबर हैं और चाहे ईश्वरकी पूजा हो, चाहे संसारके किसी स्थानकी प्राप्ति, सभीको बराबरका अवसर मिलना चाहिए। ब्राह्मण वह नहीं है जो ब्राह्मणके घरमें जन्म लेता है, बल्कि जो अपनी आत्मामें झांककर सार तत्वको प्राप्त कर ले, वही ब्राह्मण है। उनके शब्दोंमें—

सो पंडित जो मनु परबोधे,
राम नामु आतम महि सोधे।
राम नामु सार रस जीवे,
उस पंडित के उपदेस जग जीवै।

गुरु अर्जुन देव

जिस पंडितके उपदेशसे सारा संसार जीवन प्राप्त करता है, उसका उपदेश कुछ लोगों तक ही सीमित नहीं होना चाहिए। अर्थात् यह नहीं होना चाहिए कि कुछ लोगोंको ऊंची जातिका समझकर वह अपना उपदेश दे और कुछको उपदेश देनेसे वह इसलिए इंकार कर दे कि उन्हें वह नीच जातिका समझता है। असली पंडित तो वह है जो इस भेद-भावसे रहित है।

गुरु अर्जुन देव कहते हैं—

चहुं बरना को दे उपदेस,
नानक उस पंडित को सदा अदेस।

डॉ. महीपसिंह

बीज मंत्र सरब का ज्ञान,
चहुं बरना महि जपै कोउ नाम।

ऊपर वाले पदमें नानकका नाम आया है। पर इसका यह मतलब नहीं है कि इसे गुरु नानकने लिखा था।

गुरु ग्रंथ साहबमें जिन सिख गुरुओंकी रचनाएं संग्रहीत हैं उन सभीने अपनी रचनाओंमें नानक शब्दका ही प्रयोग किया है। परंतु प्रश्न यह उठ सकता है कि फिर यह कैसे पता चलता है कि पद किस गुरुका है। गुरु अर्जुनने इसके लिए ग्रंथ साहबमें एक पहचान बना दी थी। ऐसे पदोंके साथ लिखा होता है—महल्ला एक, महल्ला दो, महल्ला तीन आदि। इस तरह यह पता लग जाता है कि यह पद पहले गुरुका है, कि दूसरे गुरुका है, कि तीसरे गुरुका है।

गुरु अर्जुन कर्मयोगी थे। उनका कहना था कि संसारमें सभीको अपना कर्म पूरी योग्यताके साथ करना चाहिए। संसारसे भागकर ईश्वरको नहीं प्राप्त किया जा सकता। उनका कहना था तुम उद्यम करते हुए जियो, कमाते हुए सुख प्राप्त करो, ध्यान मग्न होते हुए प्रभुसे मिलो, इस तरह तुम्हारी चिंता दूर हो जाएगी।

उद्यम करेंदियां जीअ तू,
कमावंदियां सुख भुंञ।
चिंतादियां तू प्रभु मिलि,
नानक उतरी चिंत।

सभी महान् व्यक्तियोंके संसारमें अनेक शत्रु बन जाते हैं। गुरु अर्जुनके भी बहुतसे शत्रु बन गए थे। उन्होंने उस समयके मुगल सम्राट जहांगीरको उनके खिलाफ भड़काना शुरू किया। जहांगीर उनकी बातोंमें आ गया। उसने गुरु अर्जुनको कैद कर लिया और उन्हें बहुत यंत्रणाएं दीं। जहांगीरकी आज्ञासे उन्हें बड़ा कष्ट देकर, उनका बलिदान कर दिया गया।

गुरु अर्जुनने अपनी जान दे दी, परंतु अपनी सच्चाईका रास्ता नहीं छोड़ा। उन्होंने हंसते-हंसते सभी कष्ट सह लिए। आखिरी समय तक उनके चेहरेपर वही शांत, भाव बना रहा, जो उनके व्यक्तित्वका अंग था। ●

हास्य-कथा

केंकड़ा पंडित की पाठशाला

kissekahani.com

समुद्रके किनारे एक बड़ा-सा बरगदका पेड़ है। पेड़के मोटे तनेके पास ही केंकड़ा पंडितकी पाठशाला है। अब केंकड़ा पंडित बूढ़े हो चले हैं, तो उन्होंने यह पाठशाला खोलकर बच्चोंको पढ़ाना शुरू कर दिया है। वह अपने घरसे धीरे धीरे समुद्रकी सुनहरी रेतपर चलते हुए जबतक उस पेड़के पास पहुंचते हैं तब तक टर्रटू मेंढक, सिल-बिल गिलहरी, मोटी मछलीके बच्चे कच्छू-मच्छू, दूधिया बिलाव, चुलबुली बुलबुल, चम्मक-चूं चूहा और कानू कौवा आकर पाठशालामें जम जाते हैं।

केंकड़ा पंडित आनेके बाद पहले दो मिनिट हांफते रहते हैं, फिर चश्मा साफ करके दुपट्टा उतारकर एक ओर रख देते हैं। तब तक हमेशाकी तरह उछलू बंदर हाजिरीका रजिस्टर केंकड़ा पंडितके आगे ला रखता है। केंकड़ा पंडित अपनी दोनों अगली टांगोंकी रेत झाड़कर हाजिरी लेने लगते हैं। अंतमें जब घोंटू घोंघाका नाम आता है, तो केंकड़ा पंडित चश्मेमेंसे आंखें टिमकाते हुए देखते हैं और फिर उछलू बंदर सीसे निपोरकर हंसता हुआ कहता है—"पंडितजी, पेड़पर चढ़कर देखूं घोंघा आ रहा है कि नहीं!"

"अरे, वह भोंदू घोंघा तो नहीं आया, ठीक, पर इस फटफट कछुएको क्या हुआ?"

केंकड़ा पंडित घोंटू घोंघाको हमेशा भोंदू घोंघा और फटफट कछुएको सदा फटफट कछुआ बोलते हैं। इस बातपर उनके सारे विद्यार्थी मुंहपर हाथ रखकर हंसते हैं।

आज भी हमेशाकी तरह उछलू बंदर छलांग लगाकर पेड़के ऊपर जा पहुंचा। इधर केंकड़ा पंडितने किताब निकालनेको कहा। सबने किताबें निकाल लीं। लेकिन पंडितजी अभी भी थकान महसूस कर रहे थे इसलिए टर्रटू मेंढकसे कहा, "टर्रटू तुम पढ़ो।"

टर्रटूने पढ़ना शुरू किया—"सागरके पार एक बड़ा शहर है। शहरमें एक बहुत बड़ी मिठाईकी दूकान है। दूकानमें..."

"क्या है?" केंकड़ा पंडितने एकदम सवाल किया।

"जी...मिठाई है!"

"कहां है? कच्छू, तुम बताओ।"

"जी, पेड़के पीछे..." मच्छू बोला।

"हैं! पेड़के पीछे मिठाई? कौन लाया?"

"मिठाई नहीं, पंडितजी, कच्छू!" मच्छूने डरते हुए कहा।

"खड़ा हो जा!" और यह कहकर केंकड़ा पंडित फिर ऊंघने लगे।

टर्रटू मेंढकने फिर आगे पढ़ना शुरू किया—"दूकानमें इमरती, जलेबी, बरफी, हलुवा सब कुछ मिलता है..."

"क्या मिलता है?" ऊंघसे जागते हुए केंकड़ा पंडितने पूछा।

"जी...इमरती, जलेबी, बरफी हलुवा..."

"इस लाइनको बीस बार बोलो..." यह कहकर केंकड़ा पंडितने फिर आंखें मूंद लीं। बेचारा टर्टू मेंढक पढ़ते पढ़ते हांफने लगा। उधर केंकड़ा पंडित इमरती-जलेबीके मीठे मीठे सपने देखने लगे। तभी पेड़परसे उतरकर उछलू बंदरने बताया कि घोंघा और फदफद दोनों आ रहे हैं। उछलूके आते ही चुलबुली बुलबुलने अपनी स्लेट उछलूके हाथमें दे दी। उछलू पढ़ने लगा—'पास हीके बंगलेमें खूब सारे अमरूद हैं। यह बात मुझे आज हीरामन तोतेने बताई है। वह आज हम सबका वहां इंतजार कर रहा है। पाठशाला आज नहीं आएगा।'

अब यह स्लेट एकके बाद एक सबके पास घूमती फिरी। जब चम्मक-चूं चूहेके पास पहुंची, तो उसने इसीके नीचे लिख दिया—'मेरी मम्मी कुछ मेवा लाई थी वह भी हम वहीं खाएंगे।' फिर स्लेट सबके पास घुमाई गई। उछलू बंदरके पास स्लेट पहुंची, तो उसने आगे लिखा कि—'मैं स्कूल आते समय एक छतपर रखा अचार और कुछ रोटियां उठा लाया था, वह भी वहीं खाई जाएंगी।'

फिर क्या था, सबकी जीभें चटखारे लेने लगीं और सबके पेटमें अपने आप भूख कुलबुलाने लगी।

अब कानू कौएने अपनी स्लेटपर यह समस्या लिखी कि—'इस शानदार दावतके लिए यहांसे चला कैसे जाए?'

कच्छूने तरकीब बताई : 'केंकड़ा पंडितसे छुट्टी मांग लें। कह दें हीरामन तोतेका ब्याह है।'

मच्छूने लिखा—'इस बहानेके साथ ही केंकड़ा पंडितको भी दावतका निमंत्रण देकर साथ चलनेको कहा जाए।'

सिलबिल गिलहरीने अपनी स्लेटपर लिखकर बताया कि—'आधे साथी पहले खिसक जाएं—वे लौटकर आ जाएं तब बाकी लोग चले जाएं, क्योंकि केंकड़ा पंडित आज बिल्कुल सोनेके मूडमें हैं।'

'अगर मित्रोंकी सलाह हो, तो मैं और

-मनोहर वर्मा

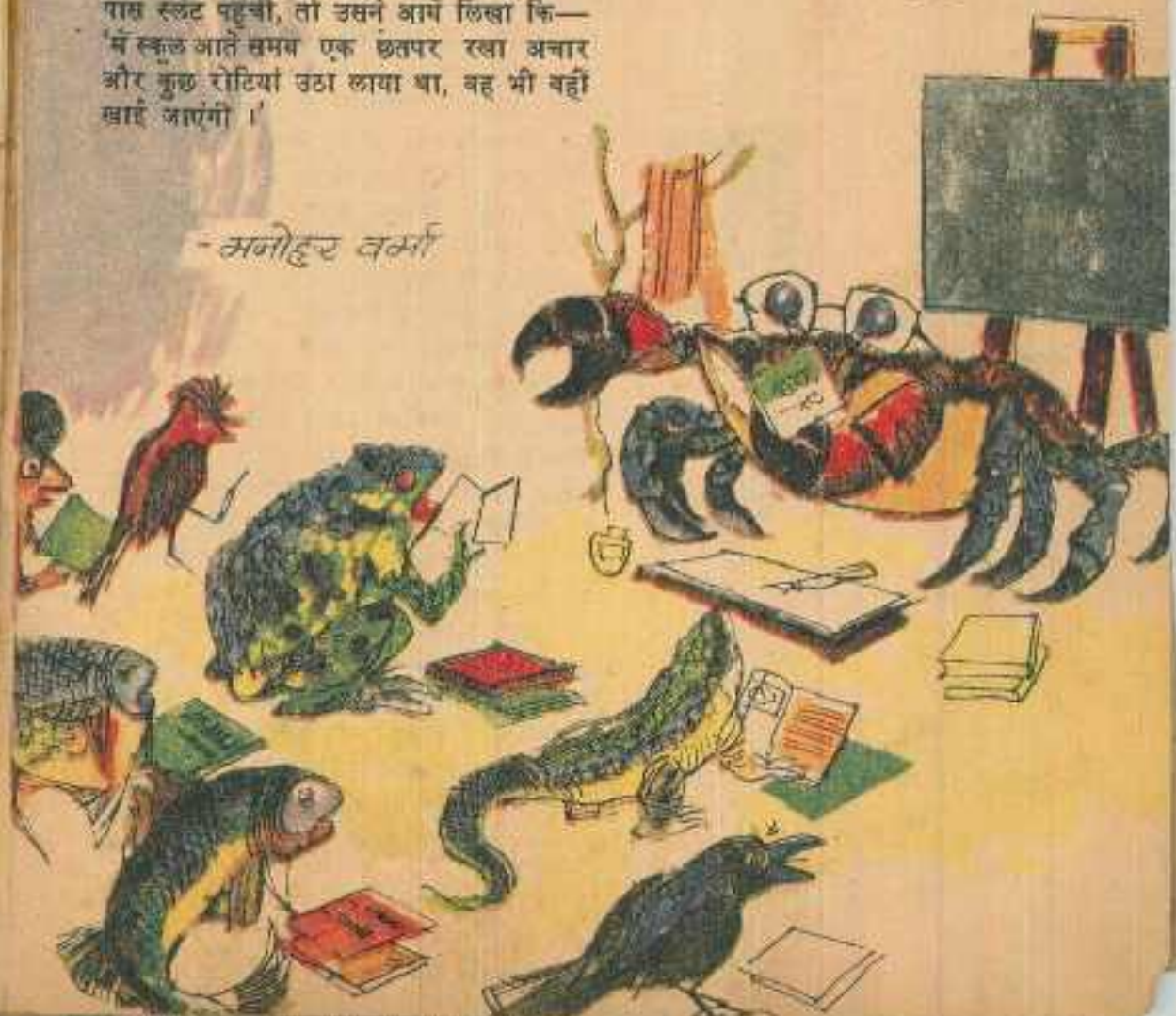

उल्लू बंदर केंकड़ा पंडितको चुपचाप उठाकर उनके घर छोड़ आएं।'—दूधिया बिलावकी इस सलाहको ज्यों ज्यों बच्चे पढ़ते गए उनकी हंसी फूटती गई।

तभी केंकड़ा पंडितने अपनी टांगोंको हिलाते हुए धीमी-सी आवाजमें कहा—"टर्रटू, मैंने कहा था न कि उस लाइनको पचास बार पढ़ो।"

बेचारे टर्रटू मेंढककी हंसी गायब। फिर पढ़ने लगा—"दूकानमें इमरती, जलेबी, बरफी, हलवा सब कुछ मिलता है..."

इधर चम्मक-चूं चूहेने अपनी स्लेटपर लिखकर सलाह दी कि इस लाइनको सुनकर केंकड़ा पंडित मीठा सपना देखने लगते हैं। अगर टर्रटू मेंढक इस लाइनको बहुत धीरे धीरे पढ़ता रहे, तो उतनी देरमें हम बाकी लोग दावत खाकर लौट सकते हैं। यह बात सभी बच्चोंको खूब पसंद आई। लेकिन जैसे ही टर्रटू मेंढकने यह सलाह पढ़ी कि उसकी गोलगोल आंखोंसे टप टप आंसू टपकने लगे। बोला—"मैं भी साथ चलूंगा।"

"बस मास्टरजी ने तुम्हें स्कूल की हैसियत पहुंचाने आने के कारण घर भेज दिया था... अगर मैं यह कपड़े पहन कर आता... तो बुरा..."

तभी सब बच्चोंने सुना, केंकड़ा पंडित बड़े धीमेसे बोल रहे हैं—"नहीं...मैं अकेला जाऊंगा। वहां जलेबी...इमरती...बरफी..." और केंकड़ा पंडितने अपने अगले हाथोंको एक दूसरेसे गूंथ लिया। बच्चोंने जैसे-तैसे अपनी हंसीको रोका। तब तक इधर कानू कौएको एक नई तरकीब सूझी और उसने अपनी स्लेटपर लिखा—'टर्रटू भाई, जैसे ही यहां घोटू घोंघा और फदफद कछुआ पहुंचें तुम उन्हें स्लेटपर लिखकर यह बता देना कि आज केंकड़ा पंडितने सबसे यह एक लाइन पचास पचास बार पढ़वाई है और उसके बाद छुट्टी दे दी। तुम भी पचास बार पढ़ो और घर चले जाओ।'

टर्रटूको यह बात जंच गई। सिलबिल गिलने धीरेसे रेतपर रेंगते हुए जाकर केंकड़ा पंडितको देखा और लौटकर सबको बताया कि पंडितजी मीठे सपनेमें डूबे हुए हैं, चुपचाप खिसक चलो।

सब टर्रटू मेंढकको पाठ पढ़ता छोड़कर वहांसे चल दिए। बेचारा टर्रटू पाठ पढ़ता रहा। थोड़ी देरमें फदफद कछुआ आ पहुंचा।

टर्रटूने तुरंत वह स्लेटपर लिखी बात पढ़वा दी और फदफदके हाथमें किताब देते हुए बोला—"मैंने पचास बार पढ़ लिया है, अब तुम पढ़ना शुरू कर दो।"

फदफदने किताब लेकर उस लाइनको पढ़ना शुरू कर दिया और टर्रटू कूदता-फांदता वहांसे तीर हो गया।

धीरे धीरे, ऊंघते-सोते-जागते घोटू घोंघा भी वहां पहुंचा। वह केंकड़ा पंडितको सोया देखकर खुद भी सो जाना चाहता था, पर तभी उसकी नजर बच्चोंकी खाली जगहपर पड़ी, सब गायब! फदफदने तुरंत घोंघाको वह स्लेटपर लिखा हुआ पढ़वा दिया। घोंघेने सोते-जागते दस मिनिटमें वह स्लेट पढ़ी तब तक कछुएने जल्दी जल्दी पचास बार वह लाइन पढ़ी और चुपचाप चल दिया।

घोटू घोंघा थोड़ा-सा पढ़ता और ऊंघने लगता। फिर थोड़ा-सा पढ़ता और ऊंघने लगता।

उधर खा-पीकर खेलते-कूदते बच्चोंकी टोली उधरसे निकली, तो सबने देखा कि घोंघा भाई रह रहकर सोते-जागते पाठ पढ़ रहे हैं और केंकड़ा पंडित घमें सुनहरी रेतपर पैर फैलाकर गहरी नींदमें डूबे हुए हैं! ●

दुम की पतवार

(पृष्ठ ११ से आगे)

रूपमें चपटी होती है, न्यूट या कस्तूरी चूहेकी तरह खड़े रूपमें चपटी नहीं होती। बीवर शायद तैरनेमें अपनी दुमसे कुछ लाभ न उठाता हो।

महाचिंगट (बड़ा झिंगा) और चिंगट (झिंगा) मछली अपनी दुमसे पानीमें तैरनेका काम लेती हैं, लेकिन इनकी दुम वास्तवमें पेट हीका पीछे बढ़ा हुआ भाग है। उसके सिरेपर एक बड़ा पंखानुमा पल्ला या डांड़-सा बना होता है। इस पूंछकी हरकतसे ये मछलियां पीछेकी ओर जा सकती हैं, लेकिन किसी दूसरी ओर नहीं जा सकतीं।

बहुत-सी चिड़ियां उड़नेमें दुमका सहारा लेती हैं। एक चिड़िया दो फांकों या दो भागोंमें फटी दुमवाली होती है, उसे अबाबील या भाण्डीक कहते हैं। इसीकी तरह दुम रखने वाली एक चील भी होती है जिसे अबाबील-पूंछ या भाण्डीक-पुच्छ चील कहते हैं। यह चील उड़ते समय अपनी दो फांकोंवाली दुमका इस्तेमाल दायें-बायें घूमने या उड़ानका रास्ता बदलनेमें करती है। इसकी दुमके दोनों बगलके बाहरी ओरके पर एक साथ ही या अलग अलग ऊपर उठकर या नीचे होकर चीलकी उस उड़ानका भी रास्ता नियंत्रित करते हैं जिसमें पंख या डैने फटफटाए बिना ही वह हवामें तैरती-सी रहती है। अबाबील भी इस चीलकी तरह दुम और पंख रखनेके कारण अपनी दुमसे उड़ानका रास्ता नियंत्रित करनेमें सहायता लेती है। यह चिड़िया जमीनके पास ही उड़ती रहकर हवामें ही कीड़ों-पतिंगोंको पकड़कर खा लिया करती है। इस कामके लिए तेजीसे घूम जानेमें दुम मदद पहुंचाती है।

लंबी दुमोंकी चिड़ियां दुमके पर कट जानेपर भी उड़ती दिखाई पड़ सकती हैं, लेकिन उनको डाल या जमीनपर उतरते समय दिक्कत हो सकती है। उड़ानसे डाल या जमीनपर उतरते समय दुम उनके बदनका संतुलन रखनेमें ही मदद करती है।

एक अजीब जंतु ग्वाटेमालामें होता है। उसका नाम बैसिलिस्क है। यह गिरगिट या गोह-की तरह होता है। इसकी दुम और पीठपर खड़ी चपटी कलगी या गाढ़ी झालर-सी बनी होती है। यह मछलियोंके पंख-सी होती है। इन पंखों या खड़ी झालरोंमें कनातकी तरह बीचमें हड्डीकी डंडिया या कड़ियां भी होती हैं। वे रीढ़की हड्डीका ही ऊपर उठा भाग होती हैं। यह जंतु पेड़की डालोंमें ऐसी जगहोंमें रहता है जहां पानी नीचे हो। यह खटका होते ही डालसे पानीमें कूदकर तैरने लगता है। तैरते समय सिर और गर्दन उठी रहती हैं। अगले पैर डांड़का काम करते हैं। चपटी शिखा या झालरवाली दुम पतवारका काम करती है।

दुम कट जानेपर बहुतसे जंतु अपनी जिंदगी भले ही चला लें लेकिन नक और घड़ियाल ऐसे जंतु हैं जो दुम कटनेपर भूखों मर जाते हैं। इनका तैरना केवल दुमपर ही निर्भर करता है। इनके पैर तैरनेमें कुछ भी काम नहीं आते। इसलिए दुम न रहनेपर ये पानीमें अपना आहार पानेके लिए भाग-दौड़ नहीं कर सकते। इनकी दुम ही पतवार और डांड़ दोनोंका काम करती है। इसलिए दुम ही इनकी जान होती है। दुम नहीं तो इनकी जान भी नहीं। ●

प्रति मास दो नए पुरस्कार

बच्चो, इस अंककी कहानियां ध्यानसे पढ़ो और हमें १५ जून तक लिखो कि अपनी पसंदके विचारसे कौनसी कहानी तुम पहले, दूसरे, तीसरे आदि नंबरोंपर रखोगे। तुम्हें इस प्रकार सभी कहानियोंपर अपनी पसंद बतानी है। इसमें एकांकी और धारावाही उपन्यास शामिल नहीं होंगे, केवल वे ही कहानियां शामिल होंगी, जिनका उल्लेख 'अतापता' में 'मवेशदार कहानियां' के अंतर्गत आया है। जिन बच्चोंकी पसंदका क्रम बहुमतसे मिलेगा, 'पराग' में उन सबके नाम छापे जाएंगे और यदि वे दोसे अधिक हुए, तो लाटरी द्वारा चुनकर दो बच्चोंको हम सुंदर सुंदर पुस्तकें पुरस्कारमें भेजेंगे। अपनी पसंद एकदम अलग कार्डपर लिखो—'अटपटे चटपटे' आदिके कार्डों पर नहीं। अपनी उम्र भी अवश्य लिखो। पता यह लिखो—**संपादक, 'पराग (हमारी पसंद—६), पी. आ. बाक्स नं. २१३, टाइम्स आफ इण्डिया, बिल्डिंग, बम्बई—१।**

देहरादून स्टेशनपर एकबार एक छोटा-सा इंजिन रहता था। जब वह बच्चोंको मांओंके आंचलमें छिपे दूध पीते देखता, तो उसे बड़ा दुःख होता, क्योंकि उसकी कोई मां नहीं थी और वह किसी मांके आंचलमें छिपे बच्चेको दूध पीते देखकर उसीकी तरह दूध पीनेके लिए ललकने लगता। मगर मां तो मां, उसके कोई पिता भी न थे जो उसे अपनी उंगली पकड़ाकर अपने साथ घुमाने ले जाया करते या उसके लिए सुंदर खिलौने बाजारसे लाकर देते। जब वह किसी बच्चेको अपने पिताकी उंगली पकड़े ठुमक ठुमककर चलते देखता, तो उसका भी जी उसीकी तरह ठुमकनेको ललचाने लगता। मगर उसके कहीं कोई पिता न थे। वैसे, हों तो हों, उनके संबंधमें उसे कोई ज्ञान था।

उसने कई बार अपने साथके बड़े इंजिनोंसे पूछा, "मेरे पिता कौन हैं?"

"जेम्स वाट!" एक बार एक बड़े इंजिनने उत्तर दिया।

"वह कहां रहते हैं?" नन्हे इंजिनने आशासे भरकर बेचैनीके साथ पूछा। "मैं उनसे मिल सकूंगा?"

"नहीं, तुम उनसे नहीं मिल सकोगे। वह सैकड़ों साल पहले तुम्हें जन्म देनेके बाद चल बसे थे। एक बार उन्होंने तुम्हारी उंगली पकड़कर तुम्हें चलना सिखा दिया था, फिर वह चल बसे! अब वह तुम्हें नहीं मिल सकते।"

सुनकर छोटे इंजिनकी आंखोंमें पानी भर आया। वह दुःखके कारण आगे कुछ न पूछ सका। लेकिन बादमें उसने सोचा, मेरी उम्र तो अभी बहुत कम है, जेम्स वाट मुझे सैकड़ों साल पहले कैसे जन्म दे सकते हैं, बड़े इंजिनने अवश्य ही मेरा दिल बहलानेके लिए झूठ बोला है। छोटा इंजिन फिर परेशान हो उठा। एक दिन उसने एक अन्य बड़े इंजिनके सामने जाकर बड़ी दीनतासे प्रश्न किया, "क्या तुम बता सकते हो, मेरे पिता कौन हैं?"

"स्टीवेंसन!" बड़े इंजिनने कहा।

"वह कहां रहते हैं? क्या मैं उनसे मिल सकूंगा?" छोटे इंजिनने अधीरतापूर्वक पूछा।

"नहीं, वह तुम्हें पृथ्वीपर चलता-फिरता

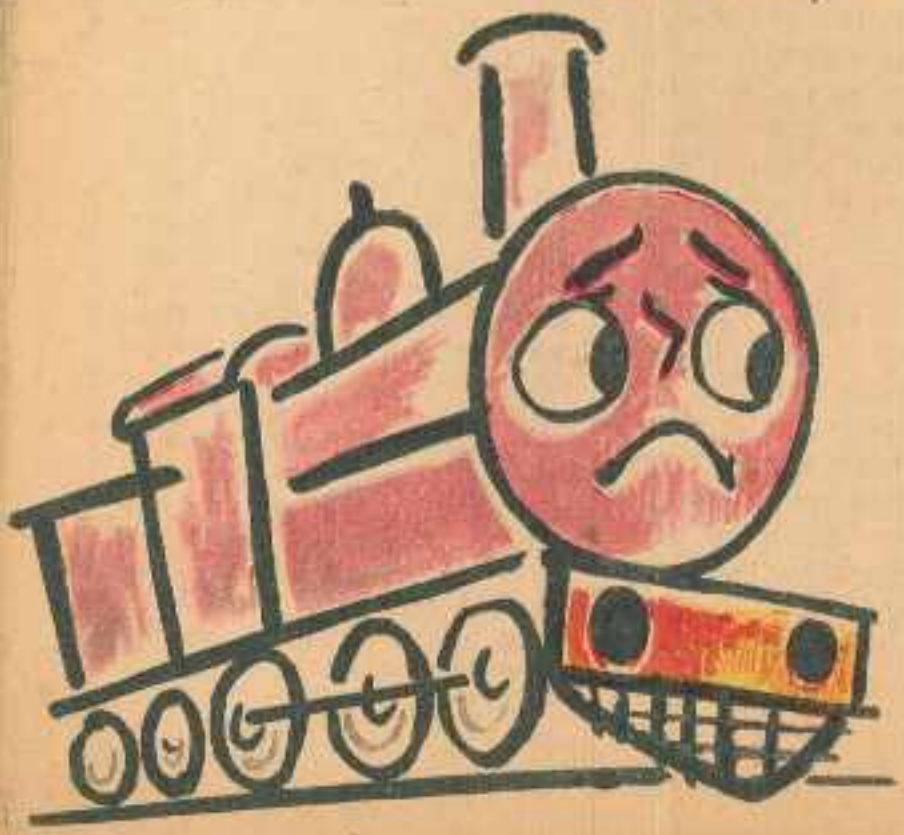

छोड़कर सद
नहीं मिल स
छोटा इं
रोते रोते
पास ही ख
बड़ा तरस
बड़े प्यारसे
"क्यों, भाई,
छोटा इं
फिर जब
भोलपनसे
सामने दोहर
कुछ बता स

छोड़कर सदाके लिए चले गए थे। अब वह तुम्हें नहीं मिल सकते।" बड़े इंजिनने बताया।

छोटा इंजिन बिलख बिलखकर रोने लगा। रोते रोते उसकी आंखें सूज गईं। यह देखकर पास ही खड़े रेलगाड़ीके बड़े डिब्बेको उसपर बड़ा तरस आया। उसने उसके नजदीक आकर बड़े प्यारसे उसकी पीठपर हाथ फेरते हुए पूछा, "क्यों, भाई, क्यों रोते हो?"

छोटा इंजिन कुछ न बोला। सिर्फ रोता रहा। फिर जब वह रोते रोते थक गया, तो उसने भोलपनसे वही प्रश्न रेलगाड़ीके बड़े डिब्बेके सामने दोहरा दिया, "तुम मेरे पिताके संबंधमें कुछ बता सकते हो?"

"हां, हां, क्यों नहीं?" रेलगाड़ीके बड़े डिब्बेने अत्यंत स्नेह-भरे शब्दोंमें कहा, "तुम्हारे पिताको लोग पानी कहते हैं और तुम्हारी मांको आग कहते हैं। इन्हीं दोनोंकी शक्तिसे तुम चलने-फिरनेके काबिल हो पा रहे हो। और कोयला तुम्हारा भाई है। चाहो तो उससे अपना रंग मिलाकर देख लो। बिल्कुल तुम्हारे जैसा है। वैसे तुम्हारा जन्म सबसे पहले लोहेकी खानमें हुआ था। तुम जमीनके अंदर दबे पड़े थे। तुम्हें बाहर निकाला गया। फिर गलाकर और तुम्हारी सफाई करके तुम्हें कारखाने तक लाया गया, जहां तुम्हें इंजिनकी शक्ल देकर पटरियोंपर चलने-फिरनेके लिए छोड़ दिया गया। फिर भी, तुम्हारी

कहानी

छोटा इंजिन

-वीरकुमार 'अधीर'

kissekahani.com

मां आग है, पिता पानी है, जिनकी बदौलत तुम प्राणवान हो।"

बूढ़े डिब्बेकी बातें सुनकर छोटा इंजिन बड़ा खुश हुआ। उसे विश्वास हो गया कि उसकी मा सचमुच आग है और पिता पानी है। अब छोटा इंजिन खुश रहने लगा। वह तेज सीटी मारता और फक-फक-फक धुएंके बादल छोड़ता हुआ मीलों दूर तक भागा चला जाता। अन्य इंजिन और रेलवे कर्मचारी उसे प्यारसे 'पपलू' कहकर पुकारते, मगर वह उनकी ओर ध्यान दिए बगैर चुपचाप मुस्कराए जाता।

फिर एक दिन एक छोटा इंजिन बाहरसे आया। उसने पपलू की सारी आशाओंपर पानी फेर दिया। अन्य डिब्बोंने पपलूसे उसका परिचय करवाया और उसका हमउम्र होनेके कारण उसे उसके ही साथ खेलनेके लिए छोड़ दिया।

पपलूने खेल ही खेलमें उससे पूछा, "तुम्हारे माता-पिता कहां हैं?"

छोटा मेहमान इंजिन पपलूकी बातें सुनकर हंसने लगा। यह देखकर पपलूको गुस्सा आ गया, उसने डांटकर पूछा, "हंसते क्यों हो?"

"मेरी इच्छा, हंसूं या रोऊं, तुम्हें क्या?" मेहमान इंजिनने कहा। फिर वह जरा सांस लेकर बोला, "पपलू, तुम निरे पागल हो, यार! कहीं इंजिनोंके भी माता-पिता होते हैं?"

"क्यों नहीं होते? मेरे माता-पिता हैं, वे . . ." पपलूने उंगली उठाकर अपने पेटकी ओर इशारा किया, जिसमें आग और पानी दोनों ही विद्यमान थे।

अब जो छोटे मेहमान इंजिनने हंसना शुरू किया, तो हंसते हंसते उसके पेटमें बल पड़ गए। हंसते हंसते ही उसने कहा, "तो तुम अपने मां-बापको अपने पेटमें लिये घूमते हो!" कहकर वह जोर-जोरसे हो-होकर हंसने लगा।

सचमुच बात समझमें आने वाली थी। नन्हा बच्चा अपने माता-पिताको अपने पेटमें रखकर कैसे घूम-फिर सकता है? पपलूने सोचा, बूढ़े डिब्बेने अवश्य ही उसे रोते देखकर सिर्फ चुप करानेके लिए उसे यह उल्टी पट्टी पढ़ा दी होगी। इसलिए वह बूढ़े डिब्बेपर बहुत झुंझलाया।

पपलू फिर उदास हो गया। वह असमंजसमें पड़ा हुआ सोच रहा था—जब प्रत्येक बच्चेके मां-बाप हैं, तो मेरे क्यों नहीं हो सकते?

पपलूको यों उदास होते देखकर एक बड़ा और बूढ़ा इंजिन प्यारसे मुस्कराया। उसे छोटे मेहमान इंजिनपर बड़ा गुस्सा आ रहा था। वह सोचने लगा, उसे पपलूके सामने ऐसा कटु सत्य भी नहीं कहना चाहिए था, जिससे उसकी भावनाओंको ठेस पहुंचे।

आखिर बड़े-बूढ़े इंजिनसे रहा नहीं गया। वह बड़े प्रेमसे पपलूके नजदीक खिसक आया और बहुत ही स्नेहसे बोला, "पपलू, तुम अपने पिताको देखना चाहते हो न?"

"हां!" खोया खोया पपलू एकाएक चौंककर बोला।

"तुम जानते हो, पपलू, पानी कहांसे आता है?"

पपलूने आकाशसे पानी बरसते देखा था, इसलिए एकदम बोला, "आकाशसे।"

"और आग?" बूढ़े इंजिनने फिर पूछा।

और पपलूने कुछ सोचकर बताया, "आग हमें सूरजसे मिलती है, वह भी आकाशमें ही होता है।"

"तुम ठीक कहते हो। आकाश हमारा पालन-पोषण करता है आग और पानी देकर, जिससे हम चलते-फिरते रहते हैं। इसलिए, आदरपूर्वक आकाशको नमस्कार करो, क्योंकि आकाश तुम्हारा-हमारा सबका पिता है!" बूढ़े इंजिनने प्यारसे समझाया।

पपलू बूढ़े इंजिनकी बातोंसे काफी आश्वस्त हुआ, उसने पूछा, "मां कहां है?"

"जिसने तुम्हें जन्म दिया है, वह तुम्हारी मां है, धरती। जिसने तुम्हें गोदमें खिलाया है और सदियों तक इसी प्रकार गोदमें खिलाती रहेगी, यह धरती माता है। धरती सबकी माता है और हम इसीकी गोदमें खेले-कूदे और बढ़े हैं। आओ, इसके चरणोंमें झुक जाएं।"

बूढ़े इंजिनकी बातोंपर पपलू अत्यधिक प्रसन्न था। अब उसे पता चल चुका था कि उसके मां-बाप कौन हैं तथा कहां हैं। अब वह किसीसे अपने मां-बापके संबंधमें नहीं पूछता था। ●

शेर का पंजा (पृष्ठ १९ से आगे)

टैक्सी चल पड़ी। सड़कपर मामूली अंधेरा था। दिन अभी पूरी तरह निकला नहीं था। गिरीश अंधेरेमें ही बाहर झांकता रहा। वह बाहरके दृश्योंमें खोया सिर्फ स्टेशन आनेके इंतजारमें था। अब उसकी घबड़ाहट बहुत काफी दूर हो चुकी थी। सोच रहा था, अब दिन निकल आया है इतना ज्यादा खतरा नहीं रहा। थोड़ी देर बाद पूरी तरह दिन निकल आएगा, तब वह बिल्कुल बेफिक्र हो जाएगा। एकाएक टैक्सी रुकी तब कहीं उसका ध्यान टूटा।

टैक्सी ड्राइवरने अपनी नकली दाढ़ी-मूंछ अलग करते हुए कहा, "पहचाना?"

गिरीश कांप उठा। केहर था। वह कांपते स्वरमें बोला, "तुम!"

केहर हंस पड़ा। कुछ बोला नहीं। गिरीश बाहर निकलनेके लिए टैक्सीका दरवाजा खोलने लगा।

केहर बोला, "खबरदार! यह देखो, रिवाल्वर है। अगर चुपचाप नहीं चले, तो समझ लो, खैर नहीं।"

गिरीश दांत पीसकर बोला, "ओह, तो रातवाला टैक्सीवाला भी तुम्हारा ही साथी था! कितने जालिम हो तुम लोग!"

"नहीं रातवाला टैक्सीवाला तुम्हारा सच्चा हमदर्द था। अगर उसने तुम्हें 'लाज' में नहीं ठहराया होता, तो तुम रातको ही मेरे कब्जेमें आ जाते," केहर बोला।

गिरीशने अकड़कर कहा, "आखिर तुम चाहते क्या हो?"

"जो चाहता हूं वह तुम्हें जल्दी ही मालूम हो जाएगा। बच्चे बहुतसे देखे लेकिन तुम जैसा नहीं। चलो उतरो।"

गिरीश अड़ा रहा, "अगर न उतरूं तो क्या कर लोगे?"

"मैं तुम्हें गोली मार दूंगा।"

"मार दो। मुझे मरना मंजूर है लेकिन भीख मांगते फिरना मंजूर नहीं।"

केहर गिरीशकी इस दृढ़तापर सन्न रह गया। कमालका साहसी लड़का है। मौत तकका डर नहीं छू गया। वह चुप बैठा रहा।

गिरीशने केहरको चुप होते देख समझा अब शायद काम बन सकता है। बोला, "सुनो, मैं जानता हूं तुम हजार रुपयेकी खातिर यह पाप कर रहे हो। बोलो है न सही बात?"

केहर फिर अचकचा गया, "तुझे कैसे मालूम हुआ?"

"हो ही गया। अब बताओ, इतनी मामूली-सी रकमके लिए इतना बड़ा पाप करना क्या ठीक है?"

"पाप-पुण्य मैं कुछ नहीं मानता। यह मेरा धंधा है।"

"खाक धंधा है! तुम्हें रुपये ही चाहिएं न, चलो मेरे साथ बरेली चलो। मैं तुम्हें अपने पिताजीसे दो हजार रुपये दिलवाऊंगा।" गिरीशकी यह तुरुप चाल थी।

इस चालने लेकिन काम नहीं किया। केहर बोला, "हां, ताकि तुम वहां जाकर या तो अंगूठा दिखा दो, या फिर पुलिसके ही हवाले कर दो।"

"लेकिन मैं वादा करता हूं, ऐसा कुछ नहीं होगा।"

"मैं वादा-आदा कुछ नहीं मानता। न तो मैं अपना वादा पूरा करता हूं और न किसीके वादेका विश्वास करता हूं।"

"फिर कैसे काम बने?"

"सीधी-सी बात है, तुम बहादुर बच्चे हो। ऐसा करो, जिससे मैंने सौदा किया है अभी चुपचाप उसके पास चलो। मैं उससे अपनी बात पूरी करके एक हजार रुपये ले लूं। फिर तुम्हारे सामनेमें मैं तुम्हारी सहायता करूंगा। तुम्हारा भी काम बनेगा और मेरा भी।"

"यह तरकीब मुझे पसंद नहीं।"

"क्यों, इसमें क्या बुराई है?"

"साफ बात है," गिरीशने चतुर व्यक्तिकी तरह कहा, "जैसे तुम मुझ जैसे अच्छे लड़केका विश्वास नहीं करते, वैसे मैं तुम जैसे अपराधीका विश्वास कैसे करूं।"

इसी बीच केहरको दिमागमें एक तरकीब आ गई थी। वह बोला, "तुम्हें बातका यकीन हो या नहीं, तुम्हें चलना होगा।"

"मैं जिंदा तो जानेसे रहा, मर जाऊं तो ले जाना!"

केहरने ठंडे लहजेमें जवाब दिया, "तुम जिंदा ही जाओगे। हां, तुम्हारी आंखें समयसे पहले ही खराब करनी पड़ेंगी।"

गिरीश लगभग चीखकर बोला, "क्या, क्या मतलब है तेरा?"

केहरने सधे लहजेसे कहा, "तुम्हारी आंखोंमें गोली मारूंगा। वैसे यह काम सरदारका है कि वह तुम्हें आंखवाला ही बना रहने दे या नहीं। लेकिन तुम मजबूर कर रहे हो, तो क्या करूं!"

गिरीशको मर जाना मंजूर हो सकता है, लेकिन अंधा बनना नहीं। उसने केहरको अड़ा देखा। उसकी आंखोंमें आंसू आ गए। वह रोते रोते बोला, "तुम मुझे छोड़ दो, केहर, मेरे ऊपर दया कर दो।"

केहर चुप रहा। गिरीशने केहरको टससे मस न होते देख सोचा, अभी खुद ढीला पड़ जानेमें ही भलाई है। वह उतरकर केहरके साथ हो लिया।

दोनों एक खंडहरमें पहुंचे। केहरने एक जंजीर खींची। एक दीवारमें रास्ता बन गया। दोनों दीवारके अंदर समा गए। अंधेरेके कारण गिरीश यह तो नहीं समझ सका कि केहरने क्या किया, लेकिन यह बात उसने अच्छी तरह समझ ली कि वे दोनों नीचे जा रहे हैं। अंधेरेके डरसे वह झट केहरसे चिमट गया और उसकी जेबसे रिवाल्वर निकाल ली।

आगे रोशनी थी। बिजलीके ट्यूब जल रहे थे। गिरीशने देखा, वहां कई बच्चे, औरत और पुरुष थे। सब सूरतसे ही भिखारी लग रहे थे। वह समझ गया बहुत टेढ़ी जगह पहुंच गया है। (क्रमशः)

REGD. No. M.H. ...

भूटान के डाक-टिकट

गुरुचरण वोहरा

भूटान हमारा बहुत निकटका पड़ोसी देश है। १९६२ में भूटानने अपने डाक-टिकट निकालने शुरू किए। अब तक वहां १४ टिकट मालाएं, जिनमें कुल ८८ टिकट हैं, जारी की गई हैं।

चित्र सं. १ से ३ तकमें दिखाए गए गोल टिकट 'स्वर्ण-मुद्रा टिकट' मालाके ९ टिकटोंके प्रथम तीन मूल्य वर्गके हैं। सम्पूर्ण माला १० चेत्रम् (चे), २५ चे, ५० चे, १ नुङ्त्रम्(नु), १.३० नु, २ नु, ३ नु, ४ नु और ५ नुके टिकटोंकी है। १०, २५ और ५० चेके टिकट हरे और सुनहरे तथा अन्य ६ टिकट लाल और सुनहरे रंगके हैं। टिकट अत्यंत सुंदर और आकर्षक हैं। मूल योजना दो विभिन्न नमूने तथा चार भिन्न आकारके १२ टिकट छपवानेकी थी—१०, १५, २५, ३३, ५० और ७५ चेत्रमके टिकट रजत-मुद्राके तथा १, १.३०, २, ३, ४ और ५ नुङ्त्रमके टिकट स्वर्णमुद्राके। परंतु बादमें रजत-मुद्राका विचार त्याग दिया गया और चेत्रम् मूल्य वर्गके केवल तीन टिकट स्वर्ण-मुद्रामें छापे गए। इन टिकटोंकी छपाईमें टीन और पारेके मिश्रणसे तैयारकी गई पन्नी उपयोगमें लाई जाती है।

९ टिकटोंकी एक माला, जिसपर लोक एवं धार्मिक नृत्यकी मुद्रामें विभिन्न नर्तक-नर्तकियां अंकित की गई थीं, १९६३ में जारी हुई थी। इसे 'नर्तक माला'के नामसे याद किया जाता है। मालामें २, ३, ५ (चित्र सं. ३ से ५), २०, ३३ तथा ७० चेत्रम् और १, १.३० तथा २ नुङ्त्रम मूल्य वर्गके टिकट थे। 'नर्तक माला' बड़े आकारके बहुरंगे टिकटोंकी थी, जिसने विश्व भरके संग्रहियोंका ध्यान भूटानके टिकटोंकी ओर आकर्षित किया।

फूलोंके ८ बहुरंगी सुंदर टिकटोंकी माला १९६५ में जारी की गई थी। २ और १५ चेत्रमपर पीतसेवी फूल, जिन्हें प्रिमुला भी कहते हैं, अंकित थे (चित्र सं. ७)। ५ और ३३चेके टिकटोंपर नीले रंगके चिरायता (किरात प्रजाति) के फूल थे (चित्र सं. ८), ५०चे और १ नुके टिकटोंपर तालीश पुष्प थे। तालीश एक सदा-बहार झाड़ी होती है, जो भूटानमें बहुत उगती है। चिरायता और तालीश दवाइयां बनानेके काम आते हैं। ७५ चे और २ नुके टिकटोंपर 'चंद्र पुष्प' अंकित थे। इन फूलोंको 'पीओनिया' भी कहते हैं।

न्यूयार्कमें सम्पन्न विश्व मेलेके अवसरपर भूटानने ६ बड़े आकारके बहुरंगी टिकटोंकी एक माला प्रसारित की थी। इन टिकटोंपर भूटानके आकर्षणोंके साथ साथ पश्चिमकी झलकियां भी दिखाई गई हैं।

१ चेत्रम् और १.५० नुङ्त्रमके टिकटोंपर भूटानका एक भवन और अमरीकाकी एक गगन-चुंबी अट्टालिका चित्रित है (चित्र सं. ९)।

१० च और २ नुके टिकटोंपर महात्मा बुद्ध और माइकल एंजेलोकी 'पाईटा' दिखाए गए हैं (चित्र सं. १०)। यीशु ख्रिष्टको सूलीपर चढ़ा दिए जानेपर यीशुकी देहको गोदमें रखे कुमारी मरियमके विलापकी मुद्राको पाईटाकी संज्ञा दी गई है।

२० चेके टिकटपर भूटानका सरम्य दृश्य और आकाशकी पृष्ठभूमिमें न्यूयार्कका दृश्य है, तथा ३३ चेके टिकटपर भूटानका एक छोटा-सा पुल और न्यूयार्कका आधुनिक पुल अंकित है।

१९६६में ६ नमूनेके १२ बहुरंगी टिकटोंकी एक माला वनचरोंकी प्रसारित की गई थी (चित्र सं. ११ से १५)। १ चेत्रम् और ४ नुङ्त्रमके टिकटोंपर भालू, २ चे और ३ नुके टिकटोंपर चीता, ४ चे और २ नुके टिकटोंपर जंगली सअर, ८ चे और ७५ चेके टिकटोंपर शेर, १०चे और १.५० नुके टिकटोंपर लोमड़ी, १ नु और ५ नुके टिकटोंपर 'गवाज' नामी पशु अंकित थे। गवाज हिरणके समान होता है और भूटान

'पराग' वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता

२००० रु. के पुरस्कार

*** प्रथम पुरस्कार १००० रु. * द्वितीय पुरस्कार ६०० रु. * तृतीय पुरस्कार ४०० रु.**

'पराग' मौलिक हिन्दी बाल एकांकियोंके लिए ५००–५०० रु. पुरस्कारकी दो प्रतियोगिताएं सफलताके साथ आयोजित कर चुका है।

हिन्दी बाल-साहित्यमें एक और विधाकी कमी अनुभव की जाती रही है—वैज्ञानिक कहानी। अंग्रेजीका साहित्य इससे समृद्ध है, किंतु हिन्दीके प्रौढ़ साहित्यमें भी इसकी भारी कमी है। विज्ञान और उसकी समस्याओंके प्रति भारतीय बच्चोंमें कुतूहल उत्पन्न करनेके लिए यह वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता घोषित की जा रही है। प्रतियोगितामें भेजी जाने वाली कहानियां सर्वथा मौलिक होनी चाहिएं। उसका आधार, वातावरण, कथानक किसी भी विदेशी भाषासे लिया हुआ नहीं होना चाहिए। वैज्ञानिक तथ्योंपर मुक्त कल्पना वांछित है, किंतु बाल-सुलभ मनोरंजन चुनी हुई कहानियोंका प्रधान गुण माना जाएगा। हमें आशा है कि हिन्दीके जिन कथाकारोंने वैज्ञानिक कथा-साहित्यका अनुशीलन किया है वे इस बड़े अनुष्ठानमें हमारा हाथ बंटाएंगे।

नियम

१– कहानी कमसे कम १०,००० से १५,००० (लगभग २५ से ३५ फुलस्केप टाइप पृष्ठ) शब्दोंके बीच होनी चाहिए।

२–मुख्य पात्रोंकी वेशभूषाओं, विशेषताओं आदिका क्रमबद्ध परिचय अलग कागजपर आना चाहिए, जिसके आधारपर उनके चित्र बन सकें।

३–लिफाफेके ऊपर बायें कोनेपर 'पराग वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता' लिखा होना चाहिए।

४– कहानी अनिवार्यतः अप्रकाशित, अप्रसारित तथा मौलिक होनी चाहिए। अनूदित, रूपांतरित या अन्य भाषाओंके आधारपर लिखित कहानियोंपर विचार नहीं होगा।

५–प्रत्येक कहानीकी पांडुलिपिके ऊपर एक ओर कोरा कागज अलगसे लगा होना चाहिए, जिसपर लेखकका पूरा पता, कहानीका शीर्षक, भेजनेकी तिथि आदि दर्ज हों। पांडुलिपिके अंतमें भी लेखक-लेखिकाका पूरा पता होना चाहिए।

६– अस्वीकृत कहानियोंको उसी दशामें वापस किया जाएगा, जब कि प्रेषकका पता लिखा व टिकट लगा लिफाफा संलग्न होगा।

७– पांडुलिपि कागजकी एक ओर स्पष्ट, सुपाठ्य व स्वच्छ अक्षरोंमें लिखी अथवा टाइप की हुई होनी चाहिए। कृपया टाइपकी मूल प्रति ही भेजनेका कष्ट करें।

८– समस्त पांडुलिपियां हमें अधिकसे अधिक १५ अगस्त १९६७ तक मिल जानी चाहिएं। पुरस्कार विजेताओंके नाम 'पराग'के नवंबर १९६७ के अंकमें प्रकाशित होंगे। इस प्रतियोगिताके संबंधमें किसी प्रकारका पत्र-व्यवहार नहीं किया जाएगा। अतः पांडुलिपिके साथ कोई पत्रादि न रखें।

९–पुरस्कृत व स्वीकृत कहानियोंका प्रथम प्रकाशनाधिकार 'पराग'का होगा। इसके बाद कापीराइट लेखकका रहेगा।

१०– कहानियां इस पतेपर भेजी जाएं — संपादक, 'पराग' (वैज्ञानिक कहानी प्रतियोगिता), पो. आ. बो. नं. २१३, टाइम्स आफ इंडिया बिल्डिंग, बम्बई–१।

११–यदि इस प्रतियोगितामें उपयुक्त तथा वांछित स्तरकी कहानियां प्राप्त न हुईं, तो संपादक 'पराग' को एक, दो या तीनों पुरस्कार रोक लेनेका अधिकार होगा।

तथा तिब्बतमें पाया जाता है।

भूटानके ये सुंदर टिकट विदेशोंमें छपते हैं। अभी तक भूटानमें केवल १४ डाकखाने हैं। अधिकतर टिकट भारतीय और विदेशी संग्रही खरीदते हैं। भूटानकी घरेलू रूपत नगण्य है। अतः प्रत्येक मालामें १, १.३०, २, ३, ४ और ५ नृङ्त्रमके टिकट छापना संग्रहियोंके हितमें नहीं।

यदि ऊंचे मूल्यके टिकट हर बार न छाप कर, कम मूल्यकी मालाएं प्रसारित हों और प्रत्येक माला ५ या ६ टिकटों तक ही सीमित हो, तो भूटानके टिकट और अधिक संख्यामें बिक सकेंगे। इससे भूटान सरकारको यथेष्ट लाभ होगा और संग्रही भी घाटेमें न रहेंगे। ●

एक साहब बाजार से तीन तोते खरीदकर लाए। घर आकर उन्होंने देखा कि उनमें से सिर्फ एक ही बोलता है, बाकी दोनों चुप रहते हैं। उन साहबने जब इसकी शिकायत दुकानदारसे की, तो उसने हंसकर कहा, "जनाब, बोलने वाला तोता असलमें नेता है, दूसरे दोनों उसके सेक्रेटरी हैं, जो उसे बताते रहते हैं कि उसे क्या बोलना है!"

•

एक : "जब मैं तुम्हारी नकल करता हूं, तो सच बताना, कैसा लगता हूं?"

दूसरा : "बिलकुल मूर्ख लगते हो।"

एक : "ओके ओके...इसका मतलब है मेरी नकल सफल रही!"

•

नया नया पागल जब भरती हुआ, तो पागलखानेके सुपरिन्टेंडेंटने उससे पूछा कि देखनेमें तो तुम भले-चंगे लगते हो, फिर तुम्हें यहां क्यों भेजा गया?

"साहब, बात यह है कि हम जुड़वां भाई थे—एक जैसी शकलके। स्कूलमें शैतानी वह करता, मार मुझपर पड़ती। मां उसे घरमें आई हुई मिठाई दो दो बार खिला देती। पिताजीके पैसे उसने चुराए, हाथ-खर्च मेरा बंद हुआ। उसने एक राहगीरको पीट दिया, सजा मुझे हुई। इतना ही नहीं, साहब, मरा तो मैं था, पर दफनाया उसे गया!"

•

उच्च शिक्षाकी छात्रवृत्तिके लिए अनेक उम्मीदवारोंमेंसे एकसे इंटरव्यूके समय शिक्षा-सचिवने प्रश्न किया—"अच्छा, विश्वके तीन महान् व्यक्तियोंके नाम बताओ?"

"नेहरू जी, कैनेडी, और, साहब, आपका शुभ नाम...!"

•

अध्यापक : "क्या तुम उदाहरण देकर यह साबित कर सकते हो कि दुनियामें अधिकांश लोग मौतसे नहीं डरते?"

विद्यार्थी : "जी हां, लोग यह जानते हैं कि नब्बे प्रतिशतसे ज्यादा लोग चारपाईपर ही मरते हैं, फिर भी कोई व्यक्ति इस डरसे चारपाईपर सोना नहीं छोड़ता!"

•

एक विदेशी किसी पहाड़ी प्रदेशकी सैर कर रहा था। तभी एक कुत्तेने पीछेसे उसकी टांगमें दांत गड़ा दिए। विदेशीने उसे मारनेकी गरजसे नीचे पड़े एक पत्थरको उठाना चाहा, पर असफल रहा। इसपर वह बोल पड़ा, "यह भी विचित्र देश है, जहां कुत्तोंको खुला रखा जाता है और पत्थरोंको बांधकर!"

•

एक देहातीको शहरमें पहली बार जानेका एक अवसर मिला। उसके सिरके बाल बहुत बढ़े हुए थे। एक शैतान लड़का पास आकर उसका मजाक उड़ाने लगा : "तुम्हारे सिरके बाल ऐसे लगते हैं, जैसे मैदानमें लंबी लंबी घास उगी हुई हो।"

देहाती था हाजिरजवाब, तुरंत बोल पड़ा, "मैं भी हैरान था कि यह गधा आखिर क्यों मेरे पास आकर खड़ा हो गया है!"

•

पुनर्जन्मका सिद्धांत सुनकर एक श्रोताने पूछा, "तो क्या अगली बार मैं गधेके रूपमें जन्म ले सकता हूं?"

वक्ता : "जी नहीं, एक ही रूप हर जन्ममें नहीं मिलता!"

•

महिला : "क्या बच्चोंका किराया आधा लगता है?"

कण्डक्टर : "जी हां, अगर वे बारहसे कम

हों, तो।"

महिला : "तब ठीक है, मेरे तो ११ ही हैं!"

•

एक जोकरका मजाक इतना पसंद किया गया कि एक सज्जनने उसे एक चांदीका पदक देनेकी घोषणा की। इसपर दूसरा जोकर उठा। उसने कहा, "साहब आपने जिसे इनाम दिया है, वह मक्कार है, धूर्त है। असलमें जो करतब मैं बंद आंखोंसे कर सकता हूं, उसे यह आंखें खुली रखकर भी नहीं कर सकता।"

"ठीक है, अगर तुम्हारा काम बढ़कर हुआ, तो मैं तुम्हें सोनेका पदक दूंगा।"

इसपर दूसरे जोकरने एक मुठ्ठी धूल उठाई, फिर अपनी आंखें बंद कीं और वह धूल अपनी आंखोंपर डालकर कहा, "अच्छा, अब पहले जोकरसे कहिए कि वह यही काम आंखें खुली रखकर करे!"

•

अखबारमें एक ऐसी चूहेदानीका विज्ञापन छपा जिसमें चूहे फांसनेके लिए जरा भी मेहनत नहीं करनी पड़ती।

जिन लोगोंने ऐसी चूहेदानीके लिए आर्डर दिए उन्हें जब चूहेदानियां मिलीं, तो उनमें पहलेसे ही चूहे मौजूद थे!

•

रास्ते चलते एक साहबकी साइकिल एक बच्चे-से टकरा गई। बच्चा गिर पड़ा और जोर जोरसे रोने लगा। साइकिलवाले साहबने उसकी धूल झाड़ते हुए पुचकारकर कहा, "रो मत, बेटे, लो यह अठन्नी मिठाई खानेको।"

बच्चेने रोना बंद करके अठन्नी ले ली और जब वह साहब चलने लगे, तो पूछा, "चाचाजी, फिर कब इधर आइएगा...!"

•

अध्यापक (छात्रसे) : "तुम्हारे दाएं हाथकी ओर पूर्व, बाएं हाथकी पश्चिम और सामने उत्तर है, तो बताओ तुम्हारे पीछे क्या है?"

छात्र : "मैंने अम्मासे पहले ही कहा था पीछेसे फटी पंट पहनकर मैं स्कूल नहीं जाऊंगा!"

•

चीनमें एक कहावत प्रसिद्ध है : "नाश्तेसे पहले कभी कुछ काम न करो। अगर नाश्तेसे पहले कभी कुछ करना पड़े, तो पहले नाश्ता करो!"

•

ब्रिटेनके प्रसिद्ध नाटककार बर्नार्ड शाका फटा कोट देखकर एक मित्रने मजाक किया, "मिस्टर शा, मूर्खता फटे कोटसे बाहर झांक रही है!"

शाने छूटते ही जवाब दिया, "अच्छा, मैं तो देख रहा हूं कि मूर्खता अंदर झांक रही है!"

•

"बेटा, मैं तुमसे कई बार कह चुका हूं कि बड़ोंकी बात नहीं काटनी चाहिए। जब तक वे चुप न हो जाएं, तुम बोला न करो," बापने बेटेको समझाते हुए कहा।

"पिताजी, अगर इस सलाहको मान लूं, तब तो मैं जिंदगी भर नहीं बोल पाऊंगा!" उत्तर मिला।

•

एक कवि महोदय कविता-पाठ कर रहे थे और श्रोतागण खड़े होकर तालियां पीट-पीटकर उन्हें बैठ जानेको कह रहे थे। आखिरमें कवि महोदयको ताव आ गया, बोले, "मैं ऐसी बकवास सुननेका आदी हूं। हर्गिज नहीं बैठूंगा।"

तभी एक श्रोता बोल उठा, "लेकिन हम ऐसी बकवास सुननेके आदी नहीं हैं, मेहरबानी करके हमें तो बैठने दीजिए!"

•

साइकिलकी मरम्मत करके मिस्त्रीने कहा, "यह साइकिल आप द्वारा इस्तेमाल की जानेपर फिर कभी कोई तकलीफ दे, तो मैं मुफ्तमें ठीक कर दूंगा, लेकिन अगर आप किसीको मांगे देंगे, तो मेरी जिम्मेदारी नहीं है।"

"ठीक कहते हो, भाई, यह साइकिल मेरी नहीं, मांगेकी है!"

—मृदुला

विटामिन और ख़निज पदार्थ आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिए बहुत ज़रूरी हैं

क्या उन्हें ये ज़रूरत के मुताबिक़ मिल रहे हैं!

नयी विमग्रान®

मल्टिपल विटामिन्स-मिनरल्स टेबलेट्स

विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी रहने से आपके परिवार के लोगों का स्वास्थ्य गिर सकता है। थकावट, ठंड और ज़ुकाम, मुख की कमी, गिरी-गिरी सी हालत, चमड़ी के तथा दांतों के रोग अधिकतर ज़रूरी विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी के कारण होते हैं।

सावधानी से खाना खाते समय भी लोग, स्वास्थ्य के लिए ज़रूरी इन विटामिनों और खनिज पदार्थों के प्रति प्रायः अधिक ध्यान नहीं देते। यह ज़रूरी नहीं कि सभी पोषक भोजन संतुलित ही हों। विटामिनों और खनिज पदार्थों की कमी, तरह-तरह के भोजनों में भी रह सकती है। तो फिर, आपको कैसे विश्वास हो कि आपके परिवार के सभी लोगों को ये बहुत ज़रूरी विटामिन और खनिज पदार्थ मिल रहे हैं और वह भी सही अनुपात में?

इस बात का निश्चय करने के लिए कि आपके परिवार के सभी लोगों को ये ज़रूरी पोषक तत्व उनकी ज़रूरत के मुताबिक़ मिल ही रहे हैं उन्हें विमग्रान दीजिए-जो हैं, विश्व की मल्टिपल विटामिन्स-मिनरल्स टेबलेट्स, विमग्रान। रोज़ाना एक। इसकी सुख सुरक्षा आज से ही क्यों न की जाय?

विमग्रान में आवश्यक ग्यारह विटामिन और कुछ खनिज पदार्थ पूर्ण मात्रा में मिले हुए हैं। लौहा—खून बढ़ाने और खोई हुई ताक़त लौटाने के लिए—कैल्सियम, हड्डियों और दांतों को मज़बूत बनाने के लिए—विटामिन सी ठंड और ज़ुकाम रोकने की शक्ति बढ़ाने के लिए—विटामिन ए—आंखों की रोशनी तेज़ करने और चमड़ी को निरोग रखने के लिए—विटामिन बी-१२, मुख उत्तेजित करने और कार्यक्षमता बढ़ाने के लिए—तथा आपके परिवार के स्वास्थ्य के लिए दूसरे ज़रूरी पोषक तत्व।

विमग्रान की एक टेबलेट के दाम हैं सिर्फ़ १३ पैसे के क़रीब। आपके पारिवारिक स्वास्थ्य के महत्व को देखते हुए तो यह दाम कुछ भी नहीं। आज ही विमग्रान ख़रीदिए-और रोज़ाना विमग्रान का सेवन कीजिए।

विमग्रान®

विमग्रान की सिर्फ़ एक टेबलेट आपको दिनभर स्फ़ूर्तिमय रखने के लिए काफ़ी है।

SQUIBB® SARABHAI CHEMICALS

Imtipi-SC-256-Hi.s

आप मुआ तो जग मुआ

बात पुराने जमानेकी है। एक राजा बड़ा आलसी था। राज-काजकी ओर तो वह कुछ भी ध्यान नहीं देता था। उसके मंत्रीको यह बात बहुत खटकती थी। जनता बहुत दुखी थी। मंत्रीने कई बार राजाका ध्यान राज्यकी दशाकी ओर आकर्षित करनेका प्रयास किया, परंतु असफल रहा।

एक दिन राजा अपने नाईसे दाढ़ी बनवा रहा था। पासमें ही मंत्री खड़ा था। राजाने अपने नाईसे प्रश्न किया, "क्यों रे, क्या हाल-चाल हैं हमारी प्रजाके?"

वह बोला, "महाराज सब अमन-चैन है। लोग मौजसे खाते-पीते हैं और चैनकी बंसी बजाते हैं। इतना ही नहीं, आठ-दस जेवर भी गढ़वा लेते हैं।"

नाईके उत्तरसे राजाको बहुत ही संतोष हुआ। उसने व्यंग्यपूर्ण दृष्टिसे मंत्रीकी ओर देखा। मंत्री चुप।

दूसरे दिन मंत्रीने एक गुप्तचरको आदेश दिया कि नाईके घरमें जो जेवर हैं उन्हें उड़ा लाए। गुप्तचरने रात होते ही सब जेवर चोरी करके मंत्रीजीके यहां पहुंचा दिए।

अगले दिन राजाने देखा कि उसके नाईका चेहरा बहुत ही उतरा हुआ है। पूछा, "क्यों रे, क्या बात है?"

नाईने गहरी सांस लेते हुए उत्तर दिया, "क्या कहूं, महाराज, राज्यमें चोरोंने बड़ा उत्पात मचा रखा है। सारी प्रजा दुःखके मारे त्राहि त्राहि कर रही है।"

मंत्री भी उस समय वहीं खड़ा था। उसने एक नौकरको हुक्म देकर जेवर मंगवा दिए और राजासे निवेदन किया, "महाराज, दोनों ही बार नाईने अपनी हालतसे सबकी हालतका अंदाज लगाया था। उसे उसकी भूल जतानेके लिए ही ऐसा किया गया था।"

राजाको तब अपनी भूलका ज्ञान हुआ।

—वीणा वल्लभ

लो, याद ही नहीं रहा (पृष्ठ २३ से आगे)

सकते हो, या सड़कोंपर नंगे घूम सकते हो। कहां कहां तुम्हारी स्वाधीनताकी सीमाएं हैं—सामाजिक, राजनीतिक, व्यावहारिक—आदि आदि?

क्या ये प्रश्न ऐसे नहीं हैं, जिनका उत्तर पानेकी उत्सुकता तुम्हें हो? यदि यह उत्सुकता नहीं है, तो पहले इस प्रकारकी उत्सुकता और उत्साह ही अपने भीतर पैदा करनेकी कोशिश करनी चाहिए—वरना तुम बुद्धू ही बने रह जाओगे और दूसरे तुमसे अनायास ही बाजी मार ले जाएंगे। जिज्ञासु होना, जाननेका उत्साह रखना, नई नई बातोंके प्रति उत्सुक होना प्रथम श्रेणीके विद्यार्थियोंके लक्षण होते हैं।

छोटी छोटी बातें

लेकिन हमें बहुतसी ऐसी बातें भी याद रखनी होती हैं, जिनका महत्व तो कम होता ही है, हम उन्हें ताजा बनाए रखनेकी जरूरत भी महसूस नहीं करते। याद रह जाएं तो अच्छा, नहीं तो काल देवता जाएगा—यह सोचकर हम उन्हें मस्तिष्कके एक कोनेमें डाल लेते हैं।

ऐसी बातोंको बार बार याद करनेकी जहमतसे बचनेके लिए यह अच्छा रहता है कि उन्हें कुछ अधिक महत्वपूर्ण और याद रखने वाली जरूरी बातोंके साथ जोड़ दिया जाए—या फिर आदतके अनुसार जिन चीजों तक हाथ पहुंचता है उसके साथ ही उन्हें रख दिया जाए।

इसकी मिसाल ही लें—मान लो तुम्हारी अम्मांजीने कहा है कि स्कूल या कालिजसे आते समय साबुनकी एक बट्टी लेते आना। शामको घर आकर उन्हें यह कहना कि याद नहीं रहा, कितनी बुरी बात है। साथ ही, स्कूल में (या कालिजमें) सारे दिन पढ़ाई या खेल-कूदमें व्यस्त रहनेके बाद यह छोटी-सी याद तुम्हें रह जाए सर्वा संभावना भी बहुत कम है। क्या तुम इस याददाश्तको एक छोटी-सी परचीपर लिखकर अपने आखिरी घंटेमें खुलने वाली पुस्तकमें लगा सकते हो?

लेकिन याद रखो—इसे याद रखनेके लिए इसका महत्व जितना भी है उतना तो तुम्हें समझना ही पड़ेगा। अपनी अम्मांजीके सामने तुम एक लापरवाह बच्चे न कहलाओ इतना महत्व तो इस साबुनकी बट्टीका है ही—या इसे लेनेके लिए तुम्हें फिर दो फर्लांग दौड़ना पड़ेगा, इतना महत्व तो है ही।

इसलिए कहना होगा कि याद तभी रह सकती है जब तुम उसे याद रखना चाहो। याद रखनेकी यह सबसे छोटी शर्त है— और— लो, यह तो हमें ही याद नहीं रहा कि इस लेखको खत्म भी करना है! ●

खिलौनों का डिब्बा

सितार बनाओ सितार बजाओ

—अरुणकुमार

पिछली बार (मार्च '६७ के अंकमें) हमने एक बहुत बढ़िया कैमरा बनाकर फोटो खींचनेकी तरकीब बताई थी। कई छोटे बच्चोंसे वह बना ही नहीं और उनकी शिकायतें आईं। वास्तवमें कोई भी बढ़िया चीज बनानेके लिए बड़ोंकी सहायता लेनेमें कोई हरज नहीं है। आखिर बनाकर दिखानेमें और लिखकर बतानेमें फरक तो होता ही है।

तो इस बार हम एकदम सरल चीज बनानेकी विधि बताते हैं। यह भी तुमसे नहीं बनी, तो मालूम है हम तुमको क्या कहेंगे...?

एक टीनका बंद डिब्बा लो, जैसा कि नीचे वाले चित्र संख्या–१ में दिखाया गया है। ऐसे डिब्बोंमें पंसारी लोग थोकमें सूखा रंग लाते हैं। मोटरके कई तेल वगैरा भी ऐसे डिब्बोंमें मिलते हैं। अगर तुम्हारे घरमें ऐसी कोई चीज न आती हो, तो तुम किसी टीनके डिब्बे बेचने वालेसे दस-बीस पैसेमें ऐसा डिब्बा ले सकते हो।

अब इस डिब्बेकी एक तरफ बीचोंबीच एक चौकोर टुकड़ा दो-तीन इंच लंबा-चौड़ा काटकर फेंक देना है (देखो चित्र संख्या–२)। यह काम जरा मुश्किल है।

इसके लिए पहले डिब्बेपर ठीक बीचोंबीच दो-तीन इंचका चौकोर वर्ग पेंसिलसे बना लो। फिर इसे टीनसाजके पास ले जाओ। टीनसाज, यानी वे लोग जो टीनके डिब्बोंपर रांगके टांके लगाते हैं, डिब्बे बनाते हैं आदि आदि। यदि डिब्बेका पूरा मुंह अलग हो सकता हो, तो

← चित्र संख्या–१

चित्र संख्या–२

डिब्बेके अंदर चौकोर लकड़ी रखकर तुम्हारे पिता या बड़े भाई इस चौकोर वर्गको छेनीसे काट सकते हैं। लेकिन बहुत कम घरोंमें ये औजार होते हैं। किंतु इस किस्मके छोटे छोटे औजार रखनेकी आदत डालनी चाहिए। इससे नई नई चीजोंका आविष्कार करने या उन्हें बनानेकी आदत बच्चोंके भीतर पैदा होती है। बड़े शहरोंमें खिलौनोंकी दुकानोंपर छोटे छोटे औजारोंके सेट बच्चोंके लिए मिलते भी हैं।

जो बच्चे टीनके डिब्बेसे बढ़िया सितार नहीं बना सकते, वे जूतोंका गत्तेका डिब्बा ले सकते हैं। उसके बीचमें इतना बड़ा वर्ग काटकर फेंकना चाहिए कि चौड़ाईमें एक एक इंचका हाशिया दोनों तरफ रह जाए।

अब चार-पांच रबड़के छल्ले लो। ये स्टेशनरीकी दुकानोंपर मिलते हैं। ऊपरके चित्रमें दिखाए अनुसार उन्हें डिब्बेके ऊपर फंसा दो। कटे हुए वर्गकी दोनों ओर दो पेंसिलें उन रबड़के छल्लोंके नीचे गुजारते हुए फंसा दो।

तुम्हारा सितार तैयार हो गया। जब तुम सितारकी तरह इन कसे हुए छल्लोंके तारोंपर उंगलियां चलाओगे, तो संगीत बजने लगेगा।

कैसा बजता है—अपने संपादक दादाको लिखकर भेजना। ●

मुन्नी रानी

नन्ही-मुन्नी
कैसे उड़
और नहीं
चलती

नन्ही-मुन्नी
कहां कह
कोई टो
फिर भी

क्यों मु
क्यों च
नानाजी
कमर झु

नन्ही-मु
क्यों झु
हम दो
हाथ-पैर

तरहके खेल-तमा
भारतके उ
जनके महीनेमें ए
'मेला होमिस गो
अनुयायी लामा
विभिन्न पशुओं
ढोल, तुरही बज
लोग दूर दूरसे
इसी प्रका
नामक उत्सवमें
बुने हुए रंग-
'कापो' (विशेष
लेकर इकट्ठे हो
नृत्य करते हैं।
उड़ीसामें
मेला लगता है
यात्रा'। इस अ

मुन्नी रानी का कौतूहल!

नन्ही-मुन्नी देख रही है—
कैसे उड़ जाती है चिड़िया?
और नहीं क्यों साथ हमारे,
चलती यह छोटी-सी गुड़िया?

नन्ही-मुन्नी सोच रही है,
कहां कहां से बादल आते?
कोई टोंटी नहीं खोलता,
फिर भी कितना जल बरसाते!

क्यों मुन्नू के दांत नहीं हैं?
क्यों चम्मच से पीता पानी?
नानाजी के बाल पके क्यों?
कमर झुका चलती क्यों नानी?

नन्ही-मुन्नी सोच रही है,
क्यों कुत्ता भों-भों करता है?
हम दो पैरों से चलते हैं,
हाथ-पैर पर वह चलता है!

छाया : धनवाल अग्रवाल

और बहुत-सी ऐसी बातें,
सोच सोच रह जाती मुन्नी;
जो कुछ अब तक सोच रही थी,
उसे न सुलझा पाती मुन्नी!

—सरस्वतीकुमार 'दीपक'

छुट्टियां और मेले (पृष्ठ ३३ से आगे)

तरहके खेल-तमाशे देखनेको मिलते हैं।

भारतके उत्तरी भाग लद्दाख क्षेत्रमें इसी जूनके महीनेमें एक बहुत बड़ा उत्सव होता है—'मेला होमिस गोम्पा'। इस अवसरपर बुद्ध धर्मके अनुयायी लामा खूब भड़कीले वस्त्र पहनकर और विभिन्न पशुओं और देवोंके मुखौटे लगाकर, ढोल, तुरही बजाते हुए नृत्य करते हैं और हजारों लोग दूर दूरसे यह दृश्य देखने जाते हैं।

इसी प्रकार आसाम राज्यमें 'रोंगली बीहू' नामक उत्सवमें लड़कियां अपने हाथोंसे करघेपर बुने हुए रंग-बिरंगे रूमाल लेकर और युवक 'कापो' (विशेष प्रकारका वृक्ष) की टहनियां लेकर इकट्ठे होते हैं। फिर लड़के और लड़कियां नृत्य करते हैं।

उड़ीसामें जूनके आसपास एक बहुत बड़ा मेला लगता है जिसका नाम है 'पुरीकी रथ-यात्रा'। इस अवसरपर भगवान जगन्नाथ, उनके भाई बलभद्र और बहिन सुभद्राकी प्रतिमाओंको ४५ फुट ऊंचे विशालकाय रथमें बैठाकर जुलूस निकाला जाता है।

केरलमें त्रिचूरके वडाक्कुनाथन मंदिरमें 'पूरम' उत्सव मनाया जाता है। इस अवसरपर विशेष दर्शनीय चीज होती है—सजे हुए हाथियोंका बहुत बड़ा जुलूस।

और उत्तर भारतमें पवित्र मानी जाने वाली गंगा, जमुना, सरयू आदि नदियोंके किनारे मुख्य मुख्य तीर्थ स्थानोंपर ज्येष्ठ मासमें पड़ने वाले दशहरेका मेला बड़ी धूमधामसे मनाया जाता है।

ये मेले हमारे देशकी संस्कृति, रीति-रिवाज, धार्मिक मान्यताओं, परंपराओं आदिका प्रतिनिधित्व करते हैं और ये ऐसी ज्ञानकी पुस्तकें हैं जिन्हें पढ़नेकी नहीं, सिर्फ खुली आंखोंसे देखनेकी जरूरत है।

—टण्डन

चींटी रानी

" चींटी रानी, चींटी रानी,
कहां कहां होकर आई?
झोले में क्या रख छोड़ा है,
लाद पीठ पर क्या लाई? "

" दिन भर मैंने की मजदूरी,
खून पसीना एक किया।
तो बोरी आटे की छोड़ी,
फिर जाकर बाजार किया! "

—लखन

kissekahani.com

नन्हे-मुन्नों के लिए नए शिशु गीत

पिछले कई वर्षोंसे 'पराग' में शिशु-गीत छापे जा रहे हैं। इन शिशु-गीतोंके चयनमें काफी सावधानी बरती जाती है, क्योंकि शुद्ध शिशु-गीत लिखना उतना आसान नहीं है जितना समझा जाता है, इसलिए अच्छे गीत बहुत कम लिखे जाते हैं। ये गीत ऐसे होने चाहिएं कि इन्हें चारसे छह साल तकके बच्चे आसानीसे जबानी याद कर लें और अन्य भाषा-भाषी बड़े बच्चे भी इनका आनंद ले सकें। इनसे मुहावरेदार हिन्दी सरलतासे जबानपर चढ़ जाती है।

kissekahani.com

बौड़मदास

पों-पों करती मोटर आई,
छुक्-छुक् करती रेल,
टन्-टन् करता रिक्शा पहुंचा,
टमटम ठेलमठेल!

कोट और पतलून झाड़कर
निकले बौड़मदास,
कौन सवारी करे, नहीं है
कानी कौड़ी पास!

—विष्णुकांत पाण्डेय

गधा और तितली

कहा गधे ने, "ओ तितली!
खेल यहां, तू कहां चली?"
तितली बोली, "बोड़मनाथ!
मेरा-तेरा कैसा साथ?"
लोटे गधा देखकर धूल,
तितली के मन भाए फूल!

—सीताराम गुप्त

kissekahani.com

बुढ़िया दादी

सुबह हो गई, मुर्गा बोला,
बुढ़िया दादी ने मुंह खोला।
उठते ही मुन्ने से बोली,
"मुन्नी से मत करो ठिठोली,
कपड़े पहनो, खाओ खाना,
हो जाओ स्कूल रवाना!"

मुंशीजी

मुंशीजी को थी कुछ जल्दी,
चले गए थे लेने हल्दी।
बैठ डेस्क पर श्याम बोला,
"बच्चो, धरो पीठ पर झोला,
जब मुंशीजी जाएं बाहर,
हम भी हो जाएं छूमंतर!"

—मंगलराम मिश्र

kissekahani.com